तनहाई के सबक़

हकीम मौ॰ अशरफ़ अली अमरोहवी

इस किताब में इन्तहाई कीमती राज़ बे इन्तहाई मुफीद और बहुत जरूरी मालूमात जो कि दुनिया भर के हर इंसान के लिये है निहायत आसान जुबान में बयान की गई है।

नाम किताब : तन्हाई के सबक

कीमत :

तादाद किताब : 1100

पेज 106

फहरिस्त

तन्हाई के सबक

उनवान	सफा
	106

हमारी तमाम कुतब होलसेल लेने वालों के लिये खसूसी रिआयत के साथ दस्तयाब है। जरुरत पड़ने पर हमसे राबता फरमा सकते है।

بسم الله الرحمن الرحيم
نحمه وصلي على رسوله الكريم الحمد لله كثيراً طيباً مباركاً فيه.

तमाम किस्म की तारीफें अल्लाह तआला के लिए ही लायक हैं, और वही हर खूबी का सही मुस्तहिक है। अल्लाह की बे शुमार रहमते कामिला ताम्मा नाज़िल हों और नाज़िल होती रहें नबियों पर खास तौर पर जनाब मुहम्मद रसूल अल्लाह स०अ०व० खातिमुल अम्बिया वल मुरसलीन पर।

हम्द व सलात के बाद ये नाकारा मुहम्मद अशरफ अमरोहवी अर्ज करता है कि कुछ जरूरी और इन्तेहाई ज़रूरी मुफीद और इन्तेहाई मुफ़ीद सबक व कारआमद बातें उम्मते मुहम्मदिया स०अ०व० के सामने पेश करूं, ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं कि अपना इल्म अपने साथ कब्र में चला जाये, इल्म वही अच्छा जिस से खुद भी फ़ैज़ उठाया जाये और लोगों को भी फ़ैज़ पहुंचाया जाये, इसी नियत से ये तीसरी किताब है जिसके अन्दर ये "पोशीदा राज़" किताब से भी कीमती मख़सूस उमूर हैं किसी को सुनाने की चीज़ नहीं है बल्कि हर पढ़ा लिखा इन्सान इस को इन्तेहाई में पढ़ कर अपने घरेलू इख़्तलाफ़ात जो आम तौर पर जौजेन के दर्मियान पेश आते रहते हैं और वहां ज़बान को खोलना मुश्किल होता है और उनके हल इसमें पेश किये गये हैं और इस किताब का नाम "तन्हाई के सबक" रखता

हूं। चूंकि ये मजमे में पढ़ने की चीज़ नहीं है. जिसको पढ़कर आप खुद भी अन्दाजा लगायेंगे और जो बात समझ में न आये इसको आप जवाबी खत के जरिया मालूम कर सकते हैं।

ज़िन्दगी की बहारें

इन्सान की जिन्दगी के चार जमाने हैं। पैदाईश के दिन से ग्यारह साल की उमर तक बचपन का ज़माना कहलाता है। इसमें खाने पीने खेल कूद के अलावा और किसी तरफ तबीयत ज्यादा राग़िब व माईल नहीं होती। बारह साल से अठारह साल तक जवानी का जमाना जाना जाता है। इस उमर में तबीयत और मिज़ाज मुबाशरत की लज़्ज़त की तरफ और हंसी मजाक, दिल लगी, सैर व तफरीह व तमाशों की तरफ माईल होती है, लेकिन शर्म व हया भी पायी जाती है इसी बारह से अठारह साल की उमर में ही अक्सर जवान गन्दी आदतों में मुब्तला होते हैं क्योंकि इस उमर में मुबाशरत की लज़्ज़त भड़कती है और मजबूर होकर अपने हाथों से अपनी जिन्दगी के जौहर को फना करना शुरू कर देते हैं जिसकी वजह से अपने हुस्न व जमाल को बरबाद, सेहत व तन्दुरूस्त की दौलत को ख़राब अक्ल व इज़्ज़त को बालाये ताक, दोस्तों में हकीर, रिश्तेदारों में ज़लील, रंडियों से करीब होकर अपने हाल को बे हाल बल्कि बद हाल इसी उमर में बना लेते हैं।

शादी होने से पहले आतिशके सूजाक (एड्स) जिर्यान, टी वी के मरीज़ बनकर ख़ाना आबाद करने के बजाये ख़ाना बरबाद कर देते हैं। वाक़ई यही बारह से अठारह साल की उमर का ज़माना जवानी के जुनून का जमाना होता है। कहते हैं कि जवानी दीवानी होती है कि जो इन अपनी जवानी को ख़राब करके अपनी उमर के दिनों को काटा करते हैं। जब जवानी गयी तो ज़िन्दगानी गयी, जवानी का तो नाम है इसी उमर में ग़लत यार दोस्तों मे रह कर मज़े का नाम सुना और अंधे बनकर बुरी आदतों में मुब्तला हो जाते हैं फिर कुछ होश नहीं रहता आख़िर जब नशा उतरता है जब आंखें खुलती हैं फिर हकीमों, डाक्टरों के पीछे फिरते हैं और इनके ऐलान व इश्तहार

देखकर तुला (आलाए तनासुल पर लगाने की दवा) और मुकव्वी (ताक़त देने वाली) दवाओं को ख़रीद कर खाते फिरते है, कभी ताकत की खीर, कभी माजून जलाली कभी माजून जमाली, कभी माजून ख़्याली, कभी माजून नराली, कभी माजून जवानी का नुस्खा तलाश करते रहते हैं। जवानी से पहले बुढ़ापे में आ जाते हैं। ये सब कुछ बे ऐअतदाली की सज़ा होती है। दर्दे सर, बदहज़मी, आंखों में रोशनी की कमी, जलक हाथ से मनी निकालना, रगों मे कमजोरी, पुट्ठों मे ज़अफ़, ये सब मुसीबतें पीछे लग जाती हैं, देखो पोशीदा राज़....

ये जवानी का ज़माना एक बहुत कीमती ज़माना होता है, इसी उमर मे हुकूमत की नज़रों मे इज्जत होती है। इसी उमर में अल्लाह तआला की थोड़ी सी की हुई इबादत ज्यादा मकबूल व महबूब होती है, इस उमर में लोगों की नजरों मे वकार होता है इसी उमर मे हर छोटे बड़े के नजरों में मरगूब होता है, इसी उमर मे अपनी जवानी अपने आप को भी भली मालूम होती है, इसी उमर में दुनिया भी कमाई जा सकती है और आखिरत भी, देखो जिस तरह तमाम जिस्म मे आंख निहायत ज़रूरी अज़ू है इसी तरह इन्सान की मनी सबसे ज़्यादा कीमती चीज़ है। इसी के साथ पूरा जिस्म है, दिमाग़ भी है, इसी के बल बूते पर तरोताजा रहता है, दिल भी इसकी मदद से चलता है, जिगर भी इसी के भरोसा से है। अगर इन्सान ने इस उमर की हिफाजत कर ली तो हर तरह से अक्लमन्द, तन्दुरुस्त, ख़ूबसूरत बना रहता है और अगर इस की हिफाजत न की तो दिमाग़ भी ख़ाली हुआ, अक़्ल भी ठिकाने नही रहती, कोई बात याद नहीं रहती, इन्सान कमज़ोर हो जाता है, चेहरे का हुलिया ख़राब, चलने मे टांगें बेलगाम, रौनक़ का तो दूर दूर तक पता नहीं रहता, भूख मर जाती है, कोई चीज़ हज़म नहीं होती, जिस्म पीला गोया कि ऐसा लगता है कि मुंह में दांत नहीं, पेट में आंत नहीं, आंखों में नूर नहीं, रतौंद है

चकौंद है, गर्ज तमाम बदन का निजाम ढीला पड जाता है। निकाह के काबिल नही रहता। फिर अंधा होने के बाद होश की आखें खुलती है मगर फिर क्या होता है. बे ऐतबार हकीमों, तबीबों में लाखों रुपये दवा इलाज के रास्ते से चले जाते है। थोडे दिन दवाइयों के सहारे से जिन्दगी गुजार दी फिर वही नहूसत व नदामत के दिन सामने आ जाते हैं। अब रोने से क्या फ़ायदा? न रब का कसूर न क़िस्मत का कसूर। मारे शर्म के किसी के मिले भी नहीं, मां बाप की नज़रों में भी जलील बल्कि खुद अपनी नज़र में भी हकीर घर से निकलने को दिल नहीं चाहता, दवाइयों से दिल बहलाते रहते हैं।

मेरे नौजवान दोस्तों, आरजी चन्द रोज के मज़े पर लअ़नत भेजो, इतनी कीमती चीज को जाये न करो, अल्लाह तआला ने ये मनी का जौहर इसलिए अता किया है कि पहले इसको ख़ूब स्टॉक कर लो और हिफ़ाजत कर लो फिर इसके जरिये से औलाद का बीज तुख़्म डालो, इसी से औलाद बनती है, लाखों रुपये ख़र्च करके भी औलाद नहीं मिलती, औलाद सिर्फ मनी की ताक़त व कुव्वत से पैदा होती है।

औलाद की तरबियत

इसलिए बारह साल की उमर से जिन्दगी तो बहुत एहतमाम से पाकीज़गी के साथ इख़्तियार करना चाहिए।

दर जवानी तौबा करदन शेवा ए पैग़म्बर अस्त
वक़्ते पीरी गर्ग ज़ालिम मी शूद परहेज़ गार

यानी जवानी में तौबा करना नबियों का तरीक़ा है वरना बुढापे में तो ज़ालिम भेड़िया में बुज़ुर्ग हो जाता है। इसी उमर में गलत साथियों से दूर रहें, फ़िल्म, सिनेमा, नाच गानों, नंगी गन्दी तस्वीरों को देखने से पूरी तरह बचें, ग़ैर औरत और मर्दों से इजतनाब करें, यानी इनकी अपनी जवानी के बहार की मौत समझें। इस उमर में

बिस्तर भी अलग रखा जाये, ख्वाह हकीकी भाई बहन ही क्यो नह हो, शरई ऐतबार से बच्चों को सात साल की उमर से ही अलग अलग बिस्तरों पर सुलाने का हुक्म मिलता है, इसलिए कि ये उमर बड़ी नाजुक है, उनमें खैर व शर की कोई तमीज नहीं होती। वालिदेन को चाहिए कि इन पर सख्त गहरी नजर रखें कि कौन इनका दोस्त है? कहां कहां जाते हैं? जिससे दोस्ती है वह कैसी आदत व खसलत के हैं? बच्चे तन्हाई में किस तरह वक्त गुजारते हैं, बैयतुल खला (लैटरीन) में कितना वक्त लगाते हैं? हमाम व गुस्ल खाने में अपने हाथ से अपने आप को खराब तो नहीं करते? सोते वक्त क्या अमल करते हैं? वगैरह वगैरह। तमाम उमूर पर तमाम वक्तों पर कड़ी नज़र रखें।

शर्मगाह की जगह पर सफाई का ख्याल बहुत ज़रूरी है ताकि मेल कुचैल जमा न हो इससे खुजली खारिश पैदा होकर शर्मगाह से लज्जत व खेल के बहाने से आदत गन्दी न हो, बल्कि जवानों को भी शर्मगाह के मकाम को खुसूसी तौर पर साफ करते रहना चाहिए।

अगर वालिदेन औलाद को बुरी गंदी आदतों में देखें या मुब्तला होने का इशारा आता हो तो औलाद को मुहब्बत के नाते से बिल्कुल साफ साफ तरीके से समझा दें और समझाने में बिल्कुल शर्म न करें अगर वालिदेन ने औलाद को समझाने में जरा भी शर्म की तो जिन्दगी का फल फूल फलने और खिलने से पहले ही मुर्झा जायेगा फिर याद को वालिदेन भी रोयेंगे और औलाद भी रोयेगी। या अगर वालिदेन न समझा सकते हों तो चाहिए कि उस्ताजों व करम फरमाओं या दूसरों के जरिये से तम्बिया कराओ और अच्छे अख्लाक पैदा करने वाली किताबों का मुतालेआ करने को दो, नेक सालिहीन लोगों की मजलिस तक रहनुमाई करो।

19 साल से 25 साल की उमर का जमाना कामिल बालिग

जवान होने का है. इस उमर मे अख़्लाक बहादुरी पर जोश ज़्यादा होता है. औरतो से मिलने की तरफ़ तबीयत ज़्यादा माईल होती है. हर वक्त ये कैफ़ियद पैदा होती है कि हराम हलाल (औरत) जैसी भी हो इससे ख़्वाहिश पूर कर लूं, मिसरा है–

मिट्टी की भी मिले तो जायज है इस हालत में

छब्बीस साल से बत्तीस साल की उमर का जमाना बदने शिद्दत का ज़माना है। इस उमर मे मनी जिस क़दर ख़र्च होती है इससे ज़्यादा पैदा होती है अगर इस उमर मे मुबाशरत की ज़्यादती न की जाये या कोई शदीद बीमारी न हो तो तमाम उमर जवानी की ताक़त व मर्दानगी की कुव्वत कम नज़र न आये, इस उमर की औरतें की अपनी जवानी के नशे में मुबाशरत की लज़्जत की तरफ़ ज़्यादा शौक़ व रग़बत के ख्याल से बनाओ सिंगार रखती हैं। बत्तीस साल से चालीस साल की उमर भी जवानी का ज़माना जाना जाता है इस उमर में जिस क़दर मनी ख़र्च होती है इसी क़दर पैदा हो जाती है। (मगर ज़्यादा पैदा नहीं होती)

इस उमर में औरत चालीस साल की अजोज़ा हो जाती है, बदन का गोश्त ढीला पढ़ने लगता है, चेहरा की रौनक कम होने लगती है अपनी ख़्वाहिश अपने जिस्म की आराईश से करती है। चापलूसी मर्दों के साथ बहुत करती है। इस उमर के बाद मर्दो को मुबाशरत करने में लुत्फ़ ज़्यादा हासिल नहीं होता है।

पचास साल की उमर की औरत औलाद की तरबियत और घर का इन्तेज़ाम अच्छा करती है और इसके बुढ़ापे का ज़माना शुरू हो जाता है और साठ साल तक अपनी ज़िन्दगी का लुत्फ़ मुबाशरत की लज़्ज़त पूरी हो जाती है, अब औलाद के ब्याह शादियों की तरफ़ रुजहान हो जाता है. औरत पचास साल की उमर होने हैज़ बन्द होने पर औलाद की पैदाईश मुम्किन नही है अगर किसी औरत के हो

जाये तो ये कायदे के खिलाफ और कुदरत रबी का जहूर होगा हां मर्दों से सौ साल तक भी औलाद का होना साबित है।

बालिग होने की अलामतें

जैसा कि हम ने "पोशीदा राज़" किताब में लिखा है कि हर इन्सान को बालिग होने के बाद निकाह की मोहताजगी पेश आती है। बालिग होने की अलामतें ये हैं। मनी (वीर्य) निकलना नींद में (एहतलाम का होना) या जागते में (शहवत से मनी का निकलना) और पोशीदा जिस्म पर बालों का निकलना, मसलन् बगलों के नीचे नाफ (टोंडी) के नीचे, नाक के अन्दर, या दाढ़ी मूंछों के बालों का निकलना या लड़के के पन्द्रह साल की उमर होना, या लड़की को माहवारी का होना, आज के तजुर्बात सामने आ रहे हैं कि बारह तेरा साल की उमर में जिन्सी ख्वाहिश पैदा हो जाती है या लड़की के लिए हमल ठहरना।

निकाह की अहमियत

रसूल अल्लाह स०अ०व० ने इरशाद फ़रमाया निकाह मेरी सुन्नत है जो मेरी सुन्नत से रग़बत न रखे वह मुझ से नहीं है, यानी मेरे तरीक़ा पर नहीं है और फ़रमाया निकाह आधा ईमान है। मतलब ये कि निकाह से पहले आमाल की अहमियत शरीअत में आधी है और निकाह होने के बाद पूरी है और फ़रमाया जिसने औरत से माल की वजह से निकाह किया तो अल्लाह तआला इसको तंग दस्त (यानी माल से फ़ायदा हासिल न करने वाला) बना देगा और जिसने ख़ानदानी शराफ़त की वजह से निकाह किया तो इसका कमीना पन बढ़ जायेगा और जिसने ज़िना से बचने की ख़ातिर इज़्ज़त को महफ़ूज़ रखने और सिला रहमी के ख़्याल से निकाह किया तो अल्लाह तआला इस निकाह में बरकत अता फ़रमायेगा।

निकाह के फ़ायदे

बुजुर्गों ने फरमाया है कि निकाह के पांच फ़ायदे है- 1.ख्वाहिश का काबू में होना, 2.घर का इन्तेजाम होना, 3.औलाद का होना, 4.बीवी बच्चो की खबर रसानी की वजह से मुरतेअद होना, 5.और इन सबसे बढ कर सुन्नत रसूल स0अ0व0 है। आप स0अ0व0 ने इरशाद फरमाया कि ऐसी औरतों से निकाह करो जिससे बच्चे ज्यादा पैदा होते हैं कि मैं कयामत के दिन अपनी उम्मत की ज्यादती पर फख्र करूंगा।

इल्म की किस्मे और इसकी अहमियत

इल्म के मअनी जानने के हैं और इल्म एक चिराग रोशनी है इस इल्म के ज़रिये से बुरी भली, हलाल व हराम चीज़ों को जाना जाता है। हदीस शरीफ में फरमाया कि इल्म का हासिल करना हर मुसलमान मर्द व औरत पर फर्ज़ व ज़रूरी है और ये फअल मुबाशरत भी एक ऐसा इल्म है जिसका जानना दुनिया के हर इन्सान को ज़रूरी है, किसी मर्द व औरत को इससे छुटकारा नहीं है। फिर बड़ा तअज्जुब होता है, कि इस इल्म को ऐब दार समझा जाता है। हालांकि दीन व दुनिया ऐतबार से इस इल्म को जानना बहुत ज़रूरी है। अगर आदमी सही अक्ल और सही राये रखता होतो इस इल्म को हरगिज़ ऐब न समझे बल्कि दीन मतीन व दुनिया व अकलीन का तकाजा इसको सीखना लाज़िम करता है। क्योंकि सब खास व आम इसके मोहताज हैं और हर एक को इसकी ज़रूरत पड़ती है। और इसकी ज़रूरत ज़ाहिर है कि जो औरत निकाह मे आये राज़ी और खुश रहे अल्लाह तआला के नजदीक भी इसका बड़ा सवाब है। हुज़ूर स0अ0व0 ने इरशाद फरमाया कि तुम मे सबसे अच्छा वह है जो अपनी शरीके हयात के साथ अच्छा बरताव करे और अच्छा

बरताव जब ही करेगा जब इल्म होगा। मेरे शेख मेरे पीर इल्म अमल के शेदाई तकवा तहारत के फिदाई सुन्नतो के आशिक हजरत मौलाना डाक्टर मुहम्मद जाहिद साहब अमरोही मुदजिल्लहु आली ने अपनी एक मजलिस मे इरशाद फरमाया कि इल्म की दो किस्में हैं. अलइल्मुल ऐलान। 1 इल्मुल अबदान, 2 इल्मुल अदयान, फरमाया कि बदन का इल्म और दीन का इल्म इल्म है बाकी सब फन हैं इल्म नहीं। बदन का इल्म दीन के इल्म से पहले नम्बर पर है कि अगर बदन सही है तो दीन पर चलना और इसके तकाजों को पूरा करना आसान है और अगर बदन तन्दुरूस्त नही तो दीन पर चलना भी मुश्किल है। तन्दुरूस्ती है तो नमाज पढ़ने की भी ताकत है तन्दुरूस्ती है तो रोजा रखने की भी ताकत है, हज करने की भी ताकत और बीवी और मां बाप के हुकूक अदा करने की भी ताकत है, तन्दुरूस्ती नहीं तो दुनिया भी नहीं और दीन भी नहीं।

मुबाशरत इल्म व उसूल के साथ अच्छी है

मुबाशरत इल्म व उसलू के साथ करने से फायदामंद है और मुबाशरते ऐअतदाल के साथ करने से दिल को ताकत मिलती है, रूह को फरहत देती है और आला-ए-तनासुल को गिजा मिलती है। गन्दे फजलात से पाकी हासिल होती है, गुस्सा कम होता है, अक्ल ज्यादा होती है, मुबाशरत की लज्जत से रूह को राहत हासिल होती है।

अगर ज्यादा अर्से तक फअल मुबाशरत को इख्तियार न किया जाये तो मनी से बहुत सी बीमारियां पैदा होती हैं जैसे सर का भारी होना, सर का चकराना, गुर्दे का दर्द, सर का दर्द, जुनून, पागलपन वगैरह वाकेअ हो जाते है, और मुबाशरत कर लेने से ये पैदा होने वाली बीमारियां खत्म हो जाती हैं यानी तर्क मुबाशरत से भी नुकसान होता है। एक शख्स मुबाशरत छोड़ देने की वजह से भूख न लगने

की बीमारी में ऐसा मुब्तला हुआ कि खाना खाने की बिल्कुल ख्वाहिश नहीं होती थी और अगर जिन्दगी बाकी रखने के लिए या लोगों के देखा देखी कुछ खापी लिया तो वह हजम न होता था और अगर जायकेदार लजीज गिजा खायी और जरा कुद ज्यादा खाली तो वह उल्टी कैय हो जाती थी इसी तरह काफी ज़माना तक इसको ये बीमारी लगी रही, होते होते पागल दीवाना हो गया और बुरी हालत हो गयी। रहमान की शान, कुदरत और तकदीर का अच्छा मुसलसल मुबाशरत का इत्तेफाक हो गया मनी और इसके बुखारात निकल जाने से बगैर इलाज व दवा के सही तन्दुरूस्त हो गया।

हकीम जालीनूस का कौल है कि एक औरत हमेशा अहतनाक रहम की बीमारी में मुब्तला रहती थी, बड़े बड़े हकीमो ने इलाज किये मगर कोई इलाज फायदा मन्द साबित नहीं हुआ, आख़िरकार इसके लिए हकीम जालीनूस ने मुबाशरत तजवीज़ की और कुछ ही दिनों में इसको शिफा हासिल हो गयी। मतलब ये है कि मुबाशरत से सिर्फ़ लज़्ज़त ही हासिल नहीं होती बल्कि संगीन बीमारियां जो मुबाशरत न होने से लगती हैं खत्म होती हैं और ये मुबाशरत ज़्यादा कुव्वत पैदा होने का ज़रिया भी है। बदन का हल्का भी करती है ज्यादा गलत फ़ासिद मादे का काटती है, मनी के बुख़ारात कम होते हैं, हीजान को रोकती है।

मुबाशरत के उसूल

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि औरतें तुम्हारा लिबास हैं और तुम उनका लिबास हो।

ज़ौजेन (मियां बीवी) को समझना चाहिए कि जिस तरह ज़्यादा खाने से पीट ख़राब होता है इसी तरज ज्यादा मुबाशरत करने से सेहत व तन्दुरूस्ती ख़राब होती है। ज़्यादा मुबांशरत से जिस तरह मर्दों को नुक़सान होता है इसी तरह औरतों की सेहत भी ख़राब होती

है। जब मुबाशरत का इरादा करे तो ये दुआ पढ़े- اللهم جنبنا الشيطان وجنب الشيطان مارزقنا इस दुआ की बरकत से शैतान मरदूद से हिफाजत होती है वरना इस दुआ के न पढ़ने से शैतान भी इस मुबाशरत में शरीक हाल हो जाता है। मुबाशरत के वक्त किब्ला रूख न हो, किब्ला व काबा की अज़मत करना हर मुसलमान पर ज़रूरी है। मुबाशरत के वक्त बड़ा सा कपड़ा मर्द औरत दोनों ओढ़ लें, नंगे होकर मुबाशरत करने से औलाद बे हया पैदा होती है। मुबाशरत करते वक्त ज्यादा बातें न करें, इससे औलाद के गूंगा होने के शदीद अन्देशा है और लकनत पैदा होने का सबब है। मुबाशरत के वक्त कुरान करीम को छुपा दें ताकि इसकी अज़मत मे कमी न आये।

एहतलाम के ज़रिये नापाकी की हालत में मुबाशरत न करें। सूरज निकलने और छुपने के वक्त भी मुबाशरत न करें वरना इन सूरतों में औलाद पागल दीवानी पैदा होती है। बहुत ज्यादा दिनों तक मुबाशरत न करने से औरत शदीद बीमारियों मे मुब्तला हो जाती है। ये बात ज़रूर याद रखनी चाहिए। अलजमाउन निसा कालमरहम लिलजिरह यानी औरतों के लिए मुबाशरत ऐसी है जैसे ज़ख़्म के लिए मरहम. मुबाशरत के बाद पैशाब करना ज़रूरी है अगर पैशाब न आता हो तो रूक कर करे वरना शदीद बीमारी का ख़तरा है, मिट्टी या गर्म पानी से इस्तन्जा करे देखो तफ़सील "पोशीदा राज़" किताब में।

मुबाशरत करने के बाद अगर दोबारा मुबाशरत करना हो तो वज़ू कर लेना अच्छा है इससे तबीयत में फ़रहत पैदा होती है। शर्मगाह को देखना मकरूह है, शर्मगाह देखने से औलाद के अंधा पैदा होने का डर है। माहवारी (हैज़) की हालत मे मुबाशरत करना दीनी व दुनियावी ऐतबार से हलाक कुन है और हराम है। देखो "पोशीदा

राज़' मुबाशरत के वक्त खुशबू लगाना जायज़ है, खुशबू लगाने से लज्ज़ात, राहत व मुसर्रत ज़्यादा होती है।

मुबाशरत की कुव्वत पैदा करने के लिए दवा खाना जायज है ताकि बीवी के हुकूक में कमी न आये, शर्मगाह के बालों को जल्द दूर करना यानी उस्तरे से साफ़ करना चाहिए, बल्कि उल्टे उस्तरे को मर्द अपने आला-ए-तनासुल पर फेरे, चांद रात, पन्द्रहवीं रात, महीने की आखिरी रात को मुबाशरत न करनी चाहिए, यानी पहली, दर्मियान की, आख़िरी, क्योंकि इन तीन रातों में शैतान की हाजिरी होती है। ईद की रात और फल वाले दरख़्त के नीचे और खड़े होकर मुबाशरत करने से औलाद बे खौफ, शरी, फसादी पैदा होती है। चांद ग्रहण और सूरज ग्रहण और आंधी आते वक़्त और शुरू रात में जबकि मैदा गिज़ा से पुर हो उन हालतों में मुबाशरत करने से औलाद कम अक्ल या बे अक्ल पैदा होती है।

रोम में बच्चे या कोई शख्स मसलन् सोकन वग़ैरह बेदार हों इस वक़्त मुबाशरत करने से ज़िना की आदत वाला बच्चा पैदा होता है।

हामला से बे वज़ू मुबाशरत न करे कि इससे औलाद बखील और अंधे दिल की पैदा होती है।

मुबाशरत के फ़ौरन् बाद ठंडा पानी या कोई ठंडी चीज़ इस्तेमाल न करें, इसलिए कि तमाम बदन गर्म रहता है वह इस ठंडक को फ़ौरन् कबूल कर लेते हैं और फालिज, लक़वा, रअशा, ज़अफ ऐअसाब वर्म (सूजन) पैदा हो जाती है।

मियां बीवी मुबाशरत के बाद अपने मक़ाम ख़ास को (गंदगी को) अलग अलग कपड़े से साफ़ करें, एक ही कपड़े से साफ़ करने से दोनों के दर्मियान ना इत्तेफ़ाकी अदावत पैदा होती है। नापाकी की हालत में बे वज़ू के कुछ न खावे, पीये, वरना इससे तंग दस्ती, फकीर पैदा होता है और निस्यां (भूल) की आदत लगती है। यानी

बेहतर तो ये है कि गुस्ल करके खाओ पिये वरना कम से कम वजू ही कर लिये।

الا كل على الجنابت محدث النسيان الاكل على الجنابت يحدث الفقر،

मतलब पीछे गुजर चुका है।

पेट भरे पर मुबाशरत करने से शुगर की बीमारी पैदा होती है इसी वजह से आख़िर रात में मुबाशरत करना बेहतर है, आदाबुस सालिहीन में लिखा है कि शुरू रात में मुबाशरत न करो।

शरई ऐतबार से किसी दिन भी मुबाशरत करना मना नहीं है लेकिन हकीमों व तबीबों व बुजुर्गों ने जिन दिनों को मुनासिब और गैर मुनासिब बताथा है उनकी रिआयत करना चाहिए।

जुमा की रात में मुबाशरत करना ज़्यादा अच्छा है अम्बिया व औलिया व उलमा व सुलहा व अतबा ने जुमा की रात में मुबाशरत की तरफ़ रग़बत की है।

हुज़ूर स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया من غسل واغتسل इस जुमा की रात में मुबाशरत करने से जो औलाद पैदा होती है नेक सालेह, आबिद, ज़ाहिद, परहेज़गार पैदा होती है, जैसा कि उन्होंने तजुर्बा किया है।

हैज़ व निफ़ास के दिनों में मुबाशरत करना सख़्त मना है अगर मुबाशरत कर ली तो तौबा व अस्तग़फ़ार करना ज़रूरी है और कुछ सदक़ा वग़ैरह भी निकाले।

जिनकी बीवियां (औरतें) हसीन व दिलनवाज़ हों उनसे मुबाशरत करने से लज़्ज़त राहत हासिल होती है। हरारते मर्दमी ज़्यादा बढ़ती है, अगरचे मनी ज़्यादा निकल जाती है लेकिन तबीयत रग़बत व शौक़ व ज़ौक़ के कमाल से रूह की राहत और मनी की पैदाईश ज़्यादा होती है।

नाबालिग औरत जो अभी जवानी को पहुंची हो, मुबाशरत करना मना है।

इसी तरह बद मिजाज और जिसके मुंह से बदबू आती हो इसी तरह मरीजा से इसी तरह सूजाक व आतिश्क ज़दा (एड्स) की मरीजा से मुबाशरत न करें। बीवी जो लागर व कमजोर और जिसको रगबत न हो और जिसको पैदाईशी ख्वाहिश न हो मुबाशरत न करें और वह जो दिमागी मेहनत इस कदर करते हों कि दिमाग से मनी का मादा खसियों में ज्यादा जाता हो या कम जाता हो मगर मनी बनती न हो और जिन के खसिये यानी फोते बहुत छोटे हों और वह जवाफयून नशा करने के आदी हों इन सब को मुबाशरत से दूर रहना चाहिए और जैसा कि मैंने पीछे ज़िक्र किया है कि हालते हैज व नफास में मुबाशरत इसलिए नहीं करना चाहिए कि मर्द के आला-ए-तनासुल पर फोड़े फुंसी निकल आते हैं और मर्दाना कमजोरी बहुत पैदा होती है क्योंकि गन्दा खून सुराख में दाखिल हो जाता है और मालेखूलिया पैदा होता है और जो हमल हालत हैज़ में ठहरेगा वह बच्चा मकरूह शकल व सूरत का होता है और जजाम की बीमारी में गिरफ्तार हो सकता है और कभी इस हालत मे जौजेन के दर्मियान शदीद नफ़रत पैदा हो सकती है और नफ़रत मर्दान्गी को कमज़ोर ज़ईफ करती है। मर्दों को भी इस वक़्त के मुबाशरत से नुकसान होता है, औरतें अलग नुक़सान उठाती हैं। खुद अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया है कि हैज़ गन्दी चीज़ है लिहाज़ा तुम हैज़ की हालत मे औरतों से हमबिस्तरी से दूर रहो, जब तक वह पाक न हो जायें, उनसे मुबाशरत न करो और जब वह अच्छी तरह पाक हो जायें तो जहां से अल्लाह ने हुक्म दिया है वहां रसे इनके पास जाओ। (कुरान करीम)

और बदसूरत औरत से जिससे दिल न मिले और इससे रग़बत

न हो इसको निकाह में नहीं लाना चाहिए इसी लिए निकाह से पहले औरत को एक नज़र देखना जायज़ है।

बे रग़बत औरत (बीवी) जिससे दिलजमई न हो इससे मुबाशरत करने से बदन कमज़ोर हो जाता है। हज़रत लुक़मान हकीम ने अपने फ़रज़न्द अर्जुमन्द को नसीहत फ़रमाई थी कि बद सूरत औरत से परहेज़ करना कि वह बूढ़ा होने से पहले बूढ़ा कर देती है कि इनके चाल चलन अच्छे नहीं होते क्योंकि आम तौर पर अख़्लाक़ भी बुरे होते हैं और उनमें मुबाशरत की ख़्वाहिश भी नही होती।

बीमारी मरीज़ा औरत से मुबाशरत इसलिए नहीं करना चाहिए कि इसकी तबीयत बीमारी की वजह से मुबाशरत की तरफ़ माईल नहीं होती और ख़ुद बीमार होने का भी अन्देशा है।

ज़्यादा बूढ़ी औरत से भी मुबाशरत नहीं करना चाहिए कि इससे मर्दान्गी से ज़अफ़ पैदा होता है कि शर्मगाह सब और ढीली होने की वजह से कि बुढ़ापे से मर्द को लज़्ज़त कम मिलती है और लज्जत का कम मिलना मर्द की ताक़त व जज़्बात व ख़ुशी को घटाता है और बुढ़ापे में शर्मगाह के अन्दर सर्दी आ जाती है और ये सर्दी कुव्वत मर्दान्गी को नुकसान पहुंचाती है और बुढ़ापे की वजह से रहम मनी को बहुत चूसता है कि जिससे मर्द के चेहरे की रौनक कम या ख़त्म हो जाती है, कमज़ोरी नातवानी लाहक होती है, हां अगर बूढ़ी औरत हो शकीला व जमीला हो पसन्दीदा ख़ातिर हो दिल आरा हो तो फिर इससे मुबाशरत करने में कोई हरज नहीं है।

नोटः– पचास साल के बाद बूढ़ी औरत जानी जाती है।

रंडी औरतों से भी दूर रहें इस वजह से कि इनमें एड्स की ख़तरनाक बीमारी पैदा होती है क्योंकि मुख़्तलिफ़ लोगों की मनी इनकी शर्मगाह में गिरती है और इसकी गर्मी ख़राब सड़ी हुई होती है और बे शमार जरासीम इसमें होते हैं जिसका असर व नुक़सान

औलाद को भी लगता है।

हामिला औरतों से भी मुबाशरत न की जाये, खास तौर पर शुरू हमल से तीसरे महीने तक और आठवें महीने से विलादत तक मुबाशरत न की जाये, इस वजह से कि रहम (बच्चा दानी) को हरकत होती है और बअज़ मर्तबा रहम को हरकत होने से हमल गिर जाता है।

खास तौर पर जिसका आला-ए-तनासुल लम्बा होगा इनकी बीवियों के हमल बहुत जल्दी गिर जाते हैं और हमल के दिनों में शर्मगाह की गर्मी भी बहुत होती है।

जिन औरतों के मुंह से बदबू आती है इनसे मुबाशरत इसलिए नहीं करना चाहिए कि बोस व प्यार के वक्त इसकी बू ना गवार गुज़रती है जिससे इसकी ख़्वाहिश का जौश कम हो जाता है और मर्दान्गी में कमज़ोरी पैदा होती है।

जो औरत (बीवी) मर्द को बहुत देर तक अपने पास बिठाये रखे बोसा व बग़लगीरी और अपनी खुशामद करने मे मशगूल रखे और मुबाशरत न कराये बल्कि देर करा दे इन हरकतों से बे मौका अन्ज़ाल हो जाता है। हमेशा औरत (बीवी) के इस तरह करने से नामर्द होने का अन्देशा रहता है क्योंकि मर्द को हमेशा जोश आता रहता है और आला-ए-तनासुल की रगें भड़कती रहती हैं। अन्ज़ाल बाहर होने की वजह से तबीयत को परेशनी और शर्मिन्दगी होती है जिससे बाह को नुक़सान होता है।

उनको मुबाशरत न करनी चाहिए

उनको भी मुबाशरत न करना चाहिए, जिनके अअ़ज़ा मर्दमी कमज़ोर हूं और जिनको मुबाशरत करने से रअ़शा पैदा होता है और जिन को रंज व गुस्सा बहुत ज़्यादा रहता हो या जिस्मानी मेहनत से थक जाते हों और जिन के पुट्ठे ज़्यादा कमज़ोर हों और जिनको

खूनी बवासीर हो और जिन की आंखें बहुत कमजोर हों और जो मैदे व आंतो की ज्यादा कमजोरी में मुब्तला हों और जिनकी मनी पतली हो और जिनका सीना तंग हो। इन तमाम को जल्दी जल्दी मुबाशरत करने से बहुत नुकसान होता है। ज्यादा मुबाशरत की लज्जत पाने वालो की रूह का जौहर ज्यादा खर्च होता है और जिनके पुट्ठे कमजोर हैं उनको रअशा की बीमारी लग जाती है।

इन हालतों में मुबाशरत न करनी चाहिए

इन हालतों मे मुबाशरत न करनी चाहिए जिस वक्त पेट भरा हुआ इसलिए इस वक्त तबीयत गिज़ा हज़म करने की तरफ मुतवज्जे होती है अगर मुबाशरत होगी तो हजम में ख़राबी पैदा होगी जिसकी खराबी से तमाम खराबियां (बीमारियां) पैदा होती हैं इसी वजह से शुरू रात में मुबाशरत करना मना है कि इस वक्त मैदा गिज़ा से भरा रहता है। और ख़ाली पेट भी मुबाशरत न करे इसलिए कि खुसिये अपनी गिज़ा गुर्दों से तलब करते हैं और गुर्दे जिगर से और जिगर मैदे से और मैदा इस वक़्त खाली होगा तो जिस्म कमज़ोर हो जायेगा. और जिस्म की कमज़ोरी रूह के कम और घटने का जरिया है ताकत भी खत्म हो जाती है. गशी खौफ़ और दक की बीमारी पैदा होती है। खाली पेट का नुकसान भरे हुए पेट से ज्यादा है।

इन हालतों में भी मुबाशरत न करें

हैज़ा और हज़मी के वक्त, रंज व गम के वक़्त और शर्म के वक्त, तेज बुख़ार के वक़्त, ज़्यादा मेहनत के बाद मुबाशरत न करें कि इस वक्त थकान ज़्यादा बढ़ जाती है, तबीयत इसके लिए आराम ज़्यादा चाहती है और मुबाशरत की हरकत, तअब व परेशानी में डालती है पस तबीयत की मुख़ालफ़त नहीं करनी चाहिए।

नींद की हालत से, बे ख्वाबी के बाद भी मुबाशरत नहीं करना चाहिए, इसलिए कि नींद वह चीज है जिससे थकान दूर होती है दिमाग जो कि आज़ा-ए रईसा से है इसको आराम मिलता है।

कैय और दस्तो के बाद और खटाई खाने के बाद और सोकर उठने के फौरन बाद भी मुबाशरत नहीं करनी चाहिए इसमे वजह जाहिर है, गजे के सर पर ओले पडने के मिस्ल है।

और जिस वक्त बदन बहुत ठंडा हो इस वक्त की मुबाशरत से ताकत कम होती है और मर्दान्गी कमज़ोर पड़ जाती है। बेपर्दगी यानी नंगे होकर मुबाशरत करने से औलाद बे शर्म और बेहया पैदा होती है और भूल की बीमारी निस्यां पैदा होता है।

बिला इजाजत बीवी की मर्ज़ी के मुबाशरत न करे और मैदान और चांदनी और आंधी में और महीने के पन्द्रह और आख़िर तारीख़ में और मुबाशरत के बाद भी मुबाशरत न करें जब तक कि असली ताक़त पैदा न हो जाये।

मस्ती व ख़ुमार में भी मुबाशरत न करे कि दिमाग़ आदमी का मदहोश फ़िक्र और अक्ल से ख़ाली होता है ऐसे वक़्त मे जो हमल ठहरेगा इससे बेवकूफ़ औलाद बे अक़्ल औलाद पैदा होगी।

सूरज के सामने मुबाशरत न करें इससे औलाद हमेशा हैरानी व परेशानी में मुब्तला रहेगी।

फल मेवेदार दरख़्त के नीचे मुबाशरत करने से औलाद ज़ालिम पैदा होती है और खड़े हो कर मुबाशरत क़रने से औलाद बुरी पैदा होती है।

सूरज निकलते और छुपते वक़्त मुबाशरत करने से औलाद चोर पैदा होती है। ईद की रात मुबाशरत करने से औलाद शरीर पै़दा होती है।

ईदल अज़हा (ईदे कुर्बान) की रात मुबाशरत करने से औलाद

चार या छ उंगली वाली पैदा होती है।

बैठ कर मुबाशरत करने से मनी पूरी तरह नहीं निकलती गुर्दे मसाने और पेट के दर्द में मुब्तला होने का सख्त खदशा है और कभी आला–ए–तनासुल पर वर्म सूजन भी पैदा हो जाती है।

करवट की तरफ से मुबाशरत करने से गुर्दा खुसिया में दर्द होने का अन्देशा है क्योंकि मुम्किन है सारी मनी बाहर न निकले।

बेहतर है कि बीस साल से पहले मुबाशरत न करे इसलिए कि तबई कुव्वत पूरे तौर पर मुकम्मल नहीं होती, पस बीस साल की उमर तक औरत के पास न जाये।

साठ साल की उमर के बाद इससे रूक जाये इसलिए कि फिर लुत्फ़ नहीं रहता जबकि हड्डियां कमज़ोर पड़ जायें फिर ताक़त ज़्यादा निकल जाकर कमज़ोरी बहुत बढ़ जाती है और जलज़ले के वक्त और हैज़ के बाद जो कि आदत के खिलाफ़ हो गुस्ल करने से पहले और इब्तेदाई रात में मुबाशरत न करनी चाहिए।

ज़रूरी नोट:– ये तमाम उमूर जो ऊपर लिखे हैं इन पर कारबन्द हों, कायदे के साथ फ़ायदा, बे क़ायदा के बेफ़ायदा बल्कि नुक़सान देह होती है।

मुबाशरत करने के तरीक़े

मुबाशरत करने के बहुत से तरीक़े हैं मगर हम सिर्फ़ वही तरीक़े अर्ज़ करेंगे जो मुफ़ीद हों और बेज़रर हों और हमल ठहरने का ज़रिया हों। सबसे पहले शौहर को चाहिए कि मुबाशरत के वक़्त इस बात का ख़्याल रखे कि पहले औरत का अन्ज़ाल हो इसके बाद अपना अन्ज़ाल हो, इसकी कई तरकीबें हैं मसलन् हाथा पायी करके बग़ल में दबाये और ख़ूब लिपटाये और चिम्टाये सीने और गले से लगाये प्यार करे और जो मक़ामात जोश को भड़कायें इनको छुए।

मुबाशरत करने का एहतमाम

मुबाशरत करने के वक्त मकान (रूम) इन्तेहाई साफ सुथरा हो कि दिल लगे और इसमे किसी और का दखल न हो क्योंकि दूसरी आदमी की मौजूदगी से शर्म व हया व हिजाब रूकावट का जरिया बनता है, तबीयत में कदूरत रहती है, दिल खुश नहीं होता। मुबाशरत करनी अगरचे पलंग पर भी अच्छी है लेकिन जमीन पर कि इसको नर्म गद्दो से सजाया जाये ज्यादा मुनासिब है और दिल की खुशी का जरिया है। आला–ए–तनासुल का सर औरत की रहम से जल्दी मिल जाता है, बिस्तर व मकान को खुशबू से मअत्तर करें, थोड़ी रोशनी का भी इन्तेजाम ज्यादा करें औरत को फूलों की महक से ज़ीनत हो औरत को बायें तरफ बिठा कर मुहब्बत वाली और शहवत अंगेज गुफतगू करें, छेडछाड़ के अलावा दूसरी बातें न करें ताकि औरत को भी मुबाशरत की तरफ भरपूर रगबत जल्दी हो, इस तरह की हरकतों से मर्द में भी ख्वाहिश ज्यादा होती है और मनी खूब पैदा होती है और इस तरह के ख्यालों और मुबाशरत की बातों से आला–ए–तनासुल में सख्ती बे हद जरूरी है। पैशाब करने का तरीका देखो "पोशीदा राज़" किताब में।

मुबाशरत करने की इब्तेदा

मुबाशरत करने की इब्तेदा इस तरह करें कि पहले बीवी को प्यार व मुहब्बत से खुश करके मुबाशरत की ख़्वाहिश में बेकरार बनायें, छातियों के सिरे दो उंगलियों से पकड़ें और आहिस्ता आहिस्ता इतना मलें कि दोनों भिंटियां सख़्त और खड़ी हो जायें, औरत की पिस्तानों को इसलिए मलते हैं कि छातियों की खाल जल्दी एहसास पकड़ती है और इस का तअल्लुक रहम यानी बच्चादानी से है और इसको छूने से औरत को मुबाशरत की ख़्वाहिश बहुत जल्दी पैदा

होती है और औरतें भी इसके छूने से बहुत खुश होती है और जल्दी मजे मे आ जाती है, उंगलियों के सिरे से औरत की दोनो रानों (जगासो)

को गदगदी करें और सहलायें और औरत की ख्वाहिश गालिब हो जाये और मुबाशरत की रगबत जल्दी पैदा हो जाये, उन्हें तरकीबो से औरत को मुबाशरत की ख्वाहिश का जोश व खरोश होगा और अन्ज़ाल में आसानी होगी।

मुबाशरत के दर्मियान अमल

पिस्तानों का मसास (मलना) करते करते जब औरत की छाती सख्त और इसके दोनों सिरे यानी भिटी खडी हो जायें और जमाई व अंगडाई लेने लगे और आंखो में सुर्ख़ी छलकने लगे और किसी कदर ऊपर चढ जायें, लज्जत की वजह से आंखें बन्द कर ले, मर्द से चिमटने लगे और जल्दी जल्दी सांस लेने लगे और सिसकी भरे मर्द को अपने पाव से दबाये या अपनी तरफ खींचे, कभी अपने दोनों हाथ मर्द की कमर मे डाले, कभी मर्द के बोसे लेने लगे और प्यार करने लगे और बेकरार बे-ताब हो जाये तो शौहर जब ये हालतें देखे इस वक्त औरत को चित लिटाकर नीचा तकिया या इसके मिस्ल रखे ताकि सुरीन ऊंची रहें और शौहर इसके दोनों पांव के दर्मियान आकर इसके ऊपर इस तरह लेटे कि अपने जिस्म का तमाम वज़न इस पर न डाले, पटेर व अपना औरत की पैशाब गाह के जरा ऊपर रखे, आला-ए-तनासुल को दाख़िल करे और शर्मगाह के सामने जरा नीचे रहम को टटोलें और इधर उधर हरकत दें ताकि रहम आला-ए-तनासुल के सामने आ जायें और जब वह मालूम हो जाये तो आला-ए-तनासुल को इस पर लटका दें और जरा अन्दर को दाखिल करके दाहिनी तरफ औरत को आहिस्ता आहिस्ता हरकत देते रहें, ज़बान औरत की चूसते रहें और नीचे का होंठ भी ज़बान से

तन्हाई के सबक

सहलाते रहें और जब जबाते रहें थोड़ी ही देर में औरत का अन्ज़ाल हो जायेगा फिर अपने शर्म अन्ज़ाल से सैराब करें और शहवत की आग को अपनी मनी के आप से बुझायें, इस तरह मुबाशरत करने से नुत्फे रहम यानी बच्चादानी मे पहुंचा जाता है और लज्जत भी औरत को इस कदर आती है कि फरीफता व मस्त हो जाती है और शौहर को मुहब्बत भरी नजरो से देखती है।

ज़रूरी हिदायत:— ये जो तरीका हम ने ऊपर बयान किया इस तरीके से सौ फीसद हमल क़रार पा जाता है अगर आला–ए–तनासुल छोटा ही क्यों न हो और औरत को तसल्ली व तशफी भी खूब हो जाती है।

ये हमल ठहरने का तरीक़ा है

अगर हमल ठहराना मन्ज़ूर हो तो अन्ज़ाल के बाद शौहर को औरत से कुछ देर चुप चाप लिपटे और चिमटे रहना चाहिए ताकि मनी पूरी रहम के अन्दर चली जाये और आला–ए–तनासुल के सुराख में कुछ भी बाकी न रहे और ये भी ख्याल रहे कि आला–ए–तनासुल रहम के अन्दर फंसा रहे कि बाहर न निकले और जब वह आला–ए–तनासुल नर्म पड जाये तब आहिस्ता से बाहर निकाले और निकालते ही फौरन् नर्म और साफ कपड़े में लपेट ले, कहीं ऐसा न हो कि ठंडी हवा लग जाये क्योंकि ठंडी हवा लगने से इसकी रगें सुस्त हो जाती हैं और जब इस की गर्मी कम हो जाये तब मुलायम कपडे से आहिस्ता से लगी हुई गंदगी को साफत्र कर दें ताकि आला–ए–तनासुल को रगड न लगे और कपड़ा मैला कुचैला किसी भी किस्म का जेहरीला न हो। औरत को मुबाशरत के बाद तीस मिनट तक चित लेटे रहना चाहिए बिल्कुल हरकत न करे ताकि मनी बाहर को न निकल जाये बल्कि औरत अपनी दोनों रानों को मिलाकर दबाले और ऐसी ही पडी रहे इस तरह लेटे रहने से

रहम का मुंह मिल जाता है और मनी रहम के गहराव में करार पकड़ लेती है अगर इसी हालत पर सो जाये तो ज्यादा बेहतर है, सोना जागने से बेहतर है ताकि हरकत से हिफ़ाज़त रहे। क्योंकि हरकत मनी को फिसला देती है और निकाल देती है, क्योंकि रहम, (बच्चादानी) एक औंधा अजू है अगर नींद न आये तो उठने बैठने, करवट लेने, हरकत करने से रुकी रहे ताकि नुत्फा रहम में अच्छी तरह जगह पकड़ ले अगर औरत हरकत करेगी तो मनी रहम से बाहर आ जायेगी हरकत न करने की वजह यही है। बच्चा की पैदाईश का काम इसी वक्त से शुरू हो जाता है, औरत को जिस कदर सुकून व आराम मिलेगा तो बच्चे की बुनियाद उतनी ही मज़बूत व क़वी होगी।

मुबाशरत से फ़ारिग़ होकर ये अमल करें

मुबाशरत से फ़रिग होने के बाद आला–ए–तनासुल और फ़ोतों (खुसियों) वगैरह को नीम गर्म पानी से धोना चाहिए, बेहतर तो ये है कि इसी वक्त गुस्ल कर ले क्योंकि नहाने से सुस्ती व थकान दूर हो जाता है। आज़ा की ताक़त कायम व बरकरार रहती है। तबीयत को फरहत हासिल होती है गर्मी के मौसम में ठंडे पानी से नहाने में कोई हरज नहीं है लेकिन फ़ौरन् नहीं नहाना चाहिए क्योंकि पानी की सर्दी से रगें सुस्त ढीली पड़ जाती हैं। मुबाशरत के बाद नींद आ जाये तो अच्छी बात है ताकि जिस कदर सुस्ती पैदा हुई है दूर हो जाये और मुबाशरत की थकन से बदन को आराम मिल जाये और ताक़त भी हासिल हो जाये।

साफ करने का कपड़ा अलग अलग होना चाहिए

शौहर अपने आला–ए–तनासुल को और औरत अपनी शर्मगाह को अलग अलग साफ कपड़े से साफ करें एक ही कपड़े से दोनों अपनी गंदगी साफ न करें. एक ही कपड़े से साफ करने से जौजैन (मियां बीवी) के दर्मियान दुश्मनी अदावत नाइत्तेफाकी पैदा होती है।

मुबाशरत के बाद की गिज़ा

मुबाशरत करने के बाद कोई मीठी चकनी गिजा जरूर इस्तेमाल करे जैसे कि कोई हलवा वगैरह (जिनको मैं यहां पर लिखने से किताब लम्बी होने का खौफ रखता हूं) खायें ताकि जिस्म और रगों का सनसनाना जो मुबाशरत के बाद होता है न हो मुबाशरत के बाद ठंडी गिज़ा हरगिज नहीं खाये इससे रगो व पुट्ठों में सुस्ती पैदा हो जाती है. तिब्बी व साईंस के ऐतबार से ये बात जरूरी है कि मुंह हाथ धोकर खायें।

मुबाशरत करने का बेहतरीन वक्त

जैसा कि हमने पीछे जिक्र किया है कि मुबाशरत करने का बेहतरीन वक्त वह है जब तबियत में बगैर ख्याल लाये मुबाशरत की तरफ राग़िब व मायल हो और आला तनासुल में सख्ती पाई जाये और खाना हजम के करीब हो वही सबसे अच्छा वक्त है. क्योंकि पेट भरने पर मुबाशरत करने से गठिया, रेशे, वरम व सूजन, शूगर की बीमारी भी लायक होती है कि आम तौर पर खाना खाने के दो घंटे बाद मुबाशरत की जाये जबकि मेदे की कवी हो अगर मेदे जईफ हो तो जब तक खाना हजम न हो जाये या पेट हल्का ना हो जाये इस बात को हर इंसान अपना हाल खूब जानता है हम इसको लिखने से

कासिर है इतनी बात ज़रुर कहनी है कि खाना हज़म होने पर जो मुबाशरत से हम्ल ठहरेगा उससे औलाद अक्लमंद पैदा होगी और होशियार भी होगी।

हज़रत मूसा काज़िम रह0 अ0 ने इरशाद फरमाया है कि रात के शुरु हिस्से में मुबाशरत न करो, आखिर रात में हर तरह का इत्मीनान होता है और दिन के मुक़ाबले में रात बेहतर है रात में आखिर रात बेहतर है और दिन भर के काम काजो से थकन वालों के लिये भी यही मुनासिब है कि अव्वल रात में सो जायें आराम करें और आखिर रात में फअल मुबाशरत इख़्तयार करे, और थकन की हालत में मुबाशरत करने से लड़का पैदा होने के इमकान बहुत कम होते है।

औरतों की ख़्वाहिश की अलामत

औरतों की ख़्वाहिश मुबाशरत की ये अलामतें है, जल्दी जल्दी बालों को बिखेरना, बिला ज़रुरत सीने को खोलना, और अपनी छाती को हाथ से मलना, बार बार जमहाई और अंगड़ाई लेना, कभी दोनों हाथ सिर पर फेरना, अपनी छोटी औलाद को बगल में दबा लेना, कभी किसी बच्चे को अपनी छाती पर लिटाना, उसे प्यार करना उससे प्यार करवाना, कानों को उंगलियों से खुजाना, बनाव सिंगार करना, ज़ेवर पहनना, सुरमा लगाना वग़ैरह वग़ैरह ।

औरत को किस वक़्त ज़्यादा ख़्वाहिश होती है।

मर्द से ज़्यादा अलग रहने के वक़्त ,हैज से फारिग होने के बाद, बच्चे पैदा होने के 40 दिन बाद , हम्ल ठहरने के दो महीने के बाद, नंगी तस्वीर देखने, नाच गाना सुनने के वक्त, सर्दी के मौसम में अकेले रहने पर, बारिश होने के वक़्त , बाग़ व पार्क में सैर करने पर, मर्दों से तारीफ सुननें पर, किसी के मुबाशरत की बातें सुनने से, मर्द

के छूने व पकड़ने से, ज़ेवर व अच्छा लिबास पहनने से, . इतर व खूशबू लगाने की हालत में, इन हालतों में औरतों को ज्यादा ख्वाहिश होती है, और तबियत चाहती है।

मुबाशरत के वक़्त शौहर के साथ औरत को भी रग़बत रखनी चाहिये

जिस तरह शौहर के बोस व किनार व प्यार व मोहब्बत व हरकत मुबाशरत हो उसी के साथ साथ बीवी को भी अपना शौक़ व रग़बत ज़ाहिर करना चाहिये, बीवी की चाहत व रग़बत से शौहर के आला तनासुल को कुव्वत व तरक्क़ी मिलती है और शौहर के दिल को खुशी को बढ़ाता है और बीवी की बे रग़बती को बढ़ाता है और बीवी की बे रगबती और नफरत से आला तनासुल की ताक़त टूटती है । अगर शौहर ने बीवी को बे रग़बती से ज़बरदस्ती मुबाशरत की और उससे हम्ल ठहर गया तो वह औलाद कराहियत और बदसूरत और बुरे मिजाज़ की पैदा होती है।

इंसान को किस अरसे तक मुबाशरत से रुकना चाहिंये

चूंकि एतदाल के साथ मुबाशरत से इंसान के बदन को फायदे पहुंचते है और अल्लाह तआला के हुक्म को भी पूरा करना होता है मगर वह फायदे जब ही होंगे जब वह अपनी हद के अन्दर हो, कोशिश यही रहे कि बीस साल की उम्र तक उस फअल मुबाशरत से दूरी इख्तयार कर लें वरना तो उसकी तिब्बी कुव्वत पूरी नही होती।

वक्त से पहले फअल मुबाशरत अच्छी नही है

उस वक्त कलील उम्र के लड़कों का हाल बहुत बुरा है कि पेट से निकलते ही पेस्ट की लज्जत में आ जाते है और वह फरोज से खरोज करते ही दखूल की तरफ लपकते है यानि अभी कुव्वत तिब्बी अपने उरुज को नही पहुंचती उस तरफ दिलचस्पी लेने लगते है और अट्ठारह बीस साल की उम्र में ही कुव्वत मर्दानगी से हाथ धो बैठते है और जिस्मानी बीमारियों से गिरफ्तार होकर ज़लील व ख्वार हो जाते है उनके वालिदेन ने अभी ऐसा ही किया जिसकी वजह से औलाद कमजोर पैदा हुई और उस कमजोर औलाद ने अपनी कमजोरी और बढ़ा ली और वक्त माहौल की खराबी और खराब कर देती है।

मुबाशरत एतदाल के साथ होना चाहिये

जैसे खाने की मुनासिब मिकदार है कि उससे ज़्यादा न हो यानि जैसा हाजमा वैसी गिजा, ऐसे ही मुबाशरत में कुव्वत बाह के एतबार से मुनासिब होनी चाहिये मुख्तलिफ इंसानों के मुख्तलिफ मिजाज़ होते है और कुव्वत मर्दानगी के हालात की वजह से मुबाशरत की मिकदार भी मुनासिब मुख्तलिफ तरीकों पर होगी। मिसाल के तौर पर कुछ लोग एक रात में कई मर्तबा फअल मुबाशरत हिशाशियत के साथ इख्तयार कर लेते है और बाज़ आदमी पन्द्रह रोज़ में बाज़ महीने भर में, बाज हफ्ते में एक बार मुबाशरत करते है। भूख और प्यास की तरह मुनासिब ये है कि जब तक शहुत तिब्बी ना हो मुबाशरत न करे और जब भी मुबाशरत के बाद राहत व फरहत मिलने के बजाये कमज़ोरी, सुस्ती और थकन मालूम हो तो जान लेना चाहिये कि ये मुबाशरत एतदाल से हटकर बे कायदगी से हुई है।

हर इंसान को अपनी कुव्वत मुबाशरत का अन्दाजा अपने मिजाज से कर लेना चाहिये आमतौर पर मोटे मजबूत लोग हफ्ते में एक मर्तबा मुबाशरत करें. मुबाशरत की ज्यादती हर शख्स के लिये नुकसान देह है. खास तौर पर इन..........लोगों को ज्यादा नुकसान होता है. जिनके फेफडे कमजोर हों. जिनको बलगम के साथ खून आता हो. जिनके आंखों की कमजोरी हो या मिर्गी हो जिनका मेदा आंतें. जिगर कमजोर हों. और जिरयान की बीमारी हो या जो ज्यादा पढ़ने लिखने. सीने पिरोने का काम करते है।

ज़्यादा मुबाशरत के नुक़सानात

ज्यादती किसी भी चीज़ की अच्छी नही है। यहां तक कि अब हयात को भी इतनी ही पिया जाये जितनी उसकी मिक़दार है तो फायदा करेगा वरना ज्यादती आबे हयात की भी ज़हर बन जाती है। हां ज़्यादती अल्लाह तआला की मुहब्बत की हो तो ठीक है. रसूलल्लाह स० अ० व० से भी इतनी, मोहब्बत करो जितनी अल्लाह तआला ने बताई नबी को नबी के असली मक़ाम पर रखो. बढ़ाओ न घटाओ, बाहरआल हर चीज़ में एतदाल होना चाहिये खास तौर पर उस लजीज़ फअल मुबाशरत में हद से आगे न बढ़े।

मुबाशरत की ज़्यादती से हम्ल ठहरने की कुव्वत भी जाती रहती है। क्योंकि मुबाशरत की ज़्यादती से मर्द का नुतफा औरत का तनहम पतला हो जाता है । नौजवान नौजवानी की दीवानी में बड़ी बेपरवाही और मज़े मज़े में अपनी जिस्मानी ताकत खो देते है। उस बात का बिल्कुल ख्याल नही होता कि मनीअ खून के सत्तर क़तरों से पैदा होती है। उसको इस तरह से ज़्यादती के साथ मुबाशरत करने से ज़ाय कर देती है । आखिर कार उसका अंजाम ये होता है कि फिर सर पकड़कर रोते है और फिर मकवी दवाएं तलाश करने लगते है।

यूरोप के लोग दिन में कई मर्तबा उम्दा उम्दा खाने खाते है

और हफ्ते मे दो तीन मर्तबा मुबाशरत करते है और हिन्दुस्तान के लोग दिन में दो मर्तबा खाना खाते है , वह भी अच्छी तरह नही बाज लोग हज़म नही कर पाते और वे एतदाली से मुबाशरत करते है कि तमाम बदन के रग पे पेठे कमज़ोर और ढीले सुस्त हो जाते है दिमाग नाकारा हो जाता है, जिससे तमाम बदन के अन्दर बीमारियां पैदा हो जाती है।

मुबाशरत की ज़्यादती से औरत को भी नुकसान होता है

जिस तरह मुबाशरत की ज़्यादती से मर्द को नुकसान होता है औरत को भी नुकसान उठाना पड़ता है कि वह भी तमाम उम्र के लिये कमज़ोर हो जाती है , सेहत कायम नही रहती , सही तन्दरुस्त औलाद होना भी मुमकिन नही रहता , हामला औरतों से ज़्यादा मुबाशरत करना मुनासिब नही है, पहले महीने में आम तौर पर कमज़ोर बच्चेदानी से हम्ल गिर जाता है बल्कि अक्सर मुबाशरत से बड़ी बड़ी बीमारियां पैदा होती है। जो लोग तन्दुरुस्त औलाद के ख्वाहिशमंद है उनको ज़रुरी है कि शुरु हम्ल और आखिर हम्ल में मुबाशरत से बाज़ आयें, हम्ल का पुख्ता यकीन नही हो सकता जब तक एक महीने हम्ल को ना गुज़र जायें, उस दरम्यान में मुबाशरत न होनी चाहिये।

मुबाशरत की ज़्यादती से वही लोग फायदा उठा सकते है जिनके बदन में गर्मी ज़्यादा हो खून की भी ज़्यादती हो, मनीभ भी ज़्यादा पैदा होती हो, यही लोग मुबाशरत करने से सर के भारी रहने और पेट के दर्द और सुस्ती और काहिली और आला तनासुल वरम खसिया वगैरह की बीमारी में मुब्तला होते है, लेकिन वह भी अपनी हदूद के अन्दर रहकर हो ज़्यादती उनको भी नुकसान देती है।

एक सबक आमेज़ वाक़या

एक हकीम साहब से उसके शार्गिद ने पूछा एक मुबाशरत करने के बाद से दूसरी मर्तबा मुबाशरत में कितना फासला व अरसा छोड़ना चाहिये? उस्ताद ने जवाब दिया एक साल, फिर शार्गिद ने पूछा अगर एक साल बर्दाश्त न कर सके, तो उस्ताद ने जवाब दिया छः माह आखिर कार सवाल जवाब होते रहे उस्ताद ने हफ्ते तजवीज किया और फरमाया कि अगर उस पर भी अम्ल न हो सके तो कफन अपने साथ तैयार रखो और मुबाशरत किये जाओ और क़ब्र भी खोद कर तैयार रखो ।

मुबाशरत की ज़्यादती से नुक़सान भी ज़्यादा है

मुबाशरत में जैसा मज़ा है वैसे ही ज़्यादती में सज़ा है कि मुबाशरत की ज़्यादती से एज़ाओं में हरारत पैदा होती है चेहरा बे रौनक हो जाता है, सीना और फेफड़े में नुक़सान लायक होकर सर के बाल कमज़ोर और तमाम जिस्म पर बाल ज़्यादा निकल आते है, ज़ईफो और बूढ़ों में सर के बाल कम और बाकी बदन पर ज़्यादा बाल देखे जाते है। जिससे ये पता चलता है कि ज़्यादती हरारत अज़ीज़ी (असली गर्मी) ज़्यादती सर के बालों की है। गर्ज़ मुबाशरत की ज़्यादती से जवान बूढ़ा , मोटा और दुबला, और ज़्यादती मुबासरत से ये बीमारियां कोई न कोई पैदा हो जाती है। मसलन यरकान (जोनबिस) इस्तकाए कान में, झनझनाहट, सकते , भूल की बीमारी, फालिज, रैशे, तली का वरम, जोड़ो का दर्द, नुकरस, अक्कुर्निसा, ज़ईफ समाअत, गुर्दे मसाने की बीमारी, लायक हो जाती है, और ऐज़ा की कमज़ोरी हो जाने की वजह से अच्छा खून पैदा नही होता, गर्ज़ की इन्तहाई संगीन बीमारियां बदन में जहान्नुम लेकर

मौत का मज़ा जल्दी चख लेता है अगर उस तरह की बीमारियां पैदा हो जायें तो पूरी तफसील बताकर अच्छे हकीम से ईलाज करवाना चाहते है। गफलत न करें या हम से मशवरा करे, पता ये है।

मुफ्ती मोहम्मद अशरफ, आफिस नम्बर 281

ए० ब्लाक, बी० टी० ए० ले आउट, एच० एम० रोड क्रास, फर्द स्ट्रीट लंगराजपुरम, बंगलौर , कर्नाटक, इण्डिया– 560 084 फोन– 080–5489083

ये शौहर के लिये मुफीद सबक़ है

हर मर्द शौहर को ये सबक़ याद कर लेना चाहिये और ज़हन नशीन कर लेना चाहिये कि मुबाशरत से ज्यादा तर कमज़ोरी व सुस्ती व थकन शौहर को ही होती है, या यूं समझो इसी मुफीद शौहर को और बीस फीसद औरत को होती है । जिसकी वजह से मर्द आराम का मुहताज होता है अगर उस बात में उस तरह मिसाल दूं तो बे जाना होगा कि हक मुबाशरत में औरत रास्ता और चलने वाली सड़क के मानिंद है और मर्द शौहर रास्ता चलने वाले की तरह है, सड़क थका नही करती,सड़क पर चलने वाले थक जाते है . इस बात से जो सबक मिलता है हर इंसान उससे खुद नसीहत व सबक़ हासिल करलें।

मुबाशरत करने के उसूल

मुबाशरत करने के उसूल तफसील के साथ पीछे भी ज़िक्र कर चुके है और 'पोशीदा राज़' किताब में भी अर्ज़ कर दिये है। मगर चंद मुख़्तसर यहां ज़िक्र किये जाते है वह ये कि मुबाशरत बाकायदा उसूल के साथ अगर मुकर्रराह वक़्त पर की जाये तो उससे बहुत से फायदे हासिल होते है। तरीका उसका ये है, एक नक्शा तय करें मसलन हम लोग दिन में तीन मर्तबा खाते है, सुबह नास्ते में, दोपहर

और रात को अगर इन तीन वक्तों के अलावा यही शख्स चार मर्तबा खा लें, तो उसको उस खाने से ज़्यादा फायदा होने के बजाये नुकसान होगा, और वह जो रोज़ तीन मर्तबा मामूल से खाया है उसको भी नुक्सान देह साबित होगा। इसी तरह मुबाशरत का भी एक उसूल कायम कर लें, दो महीने में कितनी मर्तबा की हिम्मत व कुव्वत रखता है। उस मुबाशरत करने का भी एक उसूल बनायें, मसलन पन्द्रह रोज में एक मर्तबा, या हफ्ते में एक मर्तबा कि जुमा के जुमा तय कर लें, तो बाकी दरम्यान के आयाम में फाअल मुबाशरत इख्तायार न करें।

शर्म व हया की ज़्यादती से मुबाशरत से मजबूर

बहुत से लोग शर्म व हया की ज़्यादती से फअल मुबाशरत पर कुदरत नही रखते, ख्वाह व शर्म व हया किसी भी वजह से हो इसके लिये बड़ा कामयाब ईलाज जो बहुत ही अजीब व गरीब व मुफीद अम्ल खास है व ईलाज मखसूस है मगर ये ईलाज सिर्फ हलाल के लिये ही करना है दूसरी हराम औरत के लिये हरगिज़ न किया कराया जाये, वरना उसका ईलाज करने और कराने वालों दोनों दोनों जहां में रुसवा ख्वार होगा, और दराइन की फिटकार में मुब्तला होगा। हलाल ज़रुरत मंद हज़रात ही मुझसे राब्ता कायम कर सकते है, मेरा पता ये है।

मुफ्ती मोहम्मद अशरफ, आफिस न० 281

ए० ब्लाक, बी० टी० ए० ले आउट, एच० एम० रोड क्रास, थर्ड स्ट्रीट लिंगराजपुरम, बंगलौर, कर्नाटक, इण्डिया– 560 084 फोन– 080–5469093

Md. Ashraf, H.M. Road cross, Street, Lingarajpuram, Banglore-560-084 Karnataka, India

Phone. 080-5489093

ज़ौजेन को औलाद की ख्वाहिश

अल्लाह तआला की कुदरत कामला कि औलाद तो हुई मगर लड़कियां ही लड़कियां पैदा न हों, हालांकि लड़के की चाहत शौहर से ज़्यादा बीवी को होती है कि किसी तरह लड़का पैदा हो जाये और उसके लिये हज़ारों बेकार हरकतें की जाती है। झाड़ फुंक टोने टोटके , तावीज़ गण्डे, नक्श पलीते किये कराये जाते है। लेकिन कुदरती असबाब जो मुसब्बब आला असबाब से सबब के तौर पर लड़का पैदा होने के लिये इख़्तयार किये जाते है उन असबाब से ऐसे ग़ाफिल व जाहिल रहते है कि उनको को करने का पता व ख्याल तक भी नही वरना कोई आमिल कामिल उसको बताता है । पस अल्लाह तआला की तौफीक़ से चन्द अमूर पेश करते है। उन अमूर पर लड़के की ख्वाहिश मंद अम्ल करें और अल्लाह तआला से भी बराबर मांगते रहें, हालांकि खुद रब ए कायनात ने अपनी पाकीज़ा किताब में इरशाद फरमाया है कि आसमानों व ज़मीनों का मालिक अल्लाह तआला है और वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसको चाहता है लड़कियां देता है, और जिसको चाहता है लड़के देता है, और जिसको चाहता है लड़के भी लड़कियें भी देता है, और जिसको चाहता है बे औलाद बना देता है, पस आप असबाब इख़्तयार करें व कोशिश करें और मांगते रहे, यानि दुआ करें ये मुजर्रिब है ।

लड़का पैदा होने के हालात व औक़ात

मर्द औरत का बगलगीर होना जो नफस के लिये लज्जत के लिये होता है आमतौर पर उम्मीद के खिलाफ नतीजा निकलता है अगर यही अमल निहायत गौर व शऊर और वकफे के बाद इख्तयार किया जाये तो औलाद वालिदैन की मंशा के मुताबिक़ कादिर मुतलक की तौफीक व नवाजिश से पैदा होती है। उसके कुछ कवायद लिखे जाते है जिनकी पाबन्दी इख्तयार करने से लज़्ज़त हासिल होने में भी फर्क नही आयेगा, और उम्मीद भी पूरी होगी, इन असबाब को इख्तयार करें, इन्शाअल्लाह आपकी मुरादें बराअ होंगी।

लड़का पैदा होने के असबाब

लडका पैदा होने का एक ज़रुरी अमल ये है कि जब तक सही मायनों में रगबत और गलबा मुबाशरत कामिल न हो, मुबाशरत नही करनी चाहिये, जब जज्बात असली उभरे तो तब ही मुबाशरत इख्तयार करें, लड़का पैदा होने के लिये ये अमल निहायत ज़रुरी और मुफीद व मुजर्रिब है और अल्लाह से मांगतें हुए जरुर समझना चाहिये कि उस अमल से लडका पैदा हो और हमेशा उसी अमल पर कारबंद रहें।

मुबाशरत का बहतरीन वक़्त

मुबाशरत के लिये रात का वक्त बेहतरीन वक़्त है उस बेहतरीन वक्त का लिहाज रखना चाहिये और दिन भी मसरुफियत से रात को जागिये में खलाल वाक़अ न हो, उसके लिये ज़रुरी है कि दिन में थोड़ा बहुत आराम व नींद कर लें, उसके बावजूद भी रात को अव्वल हिस्से में आराम कर लिया जाये और रात के आखिर हिस्से में मशगूल मुबाशरत हों।

ये लड़का पैदा होने का एक सबब है

जैसा कि हमने ऊपर बताया है कि सबब इख़्तयार करना इंसान का काम है उन्हें सबबों में से एक सबब ये है कि महीने में एक खास वक़्त ऐसा भी आता है जिसका औरतों को ज़रुर ख्याल रखना चाहिये, वह वक़्त औरतों के लिये ऐसा है जैसे जानवरों में उसकी मादाओं में हरारत का ज़माना होता है। हैज से फारिग होने के बाद रग़बत ज़्यादा होती है। कुछ औरतों को ये ख्वाहिश पूरे माह भी रहती है। ऐसी औरतों को हम्ल औलाद नरीना का जल्द नम्बर जाता है। औरतों को ये ख्वाहिश हैज़ के बाद फौरी तौर पर रहती है फिर एक हफ्ते के बाद उसका असर नही रहता। हैज से फारिग होने के बाद जिस कद्र जल्दी हमल ठहरेगा उसी कद्र कुवी उम्मीद है कि लड़का पैदा होगा और अगर ज़्यादा ताखिर से हम्ल ठहरेगा तो मोनिस लड़की के इमकान ज़्यादा होता है।

लेकिन उसके खिलाफ भी हो सकता है, और हुआ है। मगर कम ही चंद ही वाकआत होते है, कि हैज के बीस दिन गुज़र जाने के बाद मुबाशरत से लड़के का भी हम्ल ठहरा है। ग़र्ज़ उस सिलसिले में औरतों की मुख्तलिफ हालत है उस तमाम तफसील के लिखने का मतलब ये है कि हर वह औरत जो लडकों की मां बनना चाहती है उसको चाहिये कि एक दो महीने अपने मिजाज़ की कैफियत व हालत का गौर से ख्याल करे और जाने के हैज के दिनों के बाद किस वक्त कुदरती ख्वाहिश का गलबा होता है पस उस वक्त का ध्यान में रखकर अमल किया जाये।

लड़कियों के पैदा होने का सबब

लड़कियों के पैदा होने के असबाब में एक बड़ा सबब ये है कि ज़बरदस्ती बार बार मुबाशरत की जाये, खास तौर पर जबकि शौहर की रग़बत हो और बीवी की ख्वाहिश न हों।

हर शौहर को यह सबक़ समझ लेना चाहिये

बाज ताक तौर शौहरों की वजह से औरत को फअल मुबाशरत पर मजबूर होना पड़ता है और औरतें ये ख्याल करती है, कि हम शौहरों की नज़रों में इताअत गुज़ार फरमाबरदार रहें, और शौहर हमारी मना करने की वजह से दूसरी जगह मुंह काला न करे, यानि ज़िना न करें, ऐसी औरतें सेहत के एतबार से बरबाद हो जाती है और औलाद बनने का मादा कम हो जाता है और इसतक़रार हम्ल भी नही रहता है।

जो शौहर अपनी मज़ा के खातिर बीवी की सेहत खराब करता है वह एक जानवर से भी कम अक्ल है। इसलिए कि हर जानवर अपनी मादा को जबकि वह मिलने पर रज़ामंद न हो मजबूर नही करता, सब जानते है कि जानवरों में गाय, व भैंस, बकरी, घोड़ी, वग़ैरह यानि मादा जानवर महीने में एक मर्तबा जफती करें तो हम्ल क़रार पाता है। बहुत से हर रोज़ मुबाशरत करते है, ये सही नही है मर्द की मनीअ का कीड़ा जब औरत के हैज़े के साथ मिलता है जब ही इसतक़रार हम्ल होता है ऐसा न हो तो हरगिज़ हम्ल नही ठहरेगा, और यह उस वक़्त होता है जबकि एक साथ दोनों तरफ से मनीअ खारिज हो।

इन अयाम में मुबाशरत लड़के के लिये मुनासिब है

मादा जनीनं हर माह में एक मर्तबा हो तीन चार रोज़ माहवारी आने से पहले और तीन चार रोज़ माहवारी के बाद जारी होता है। जिन दिनों में वह खारिज होता है तो औरत को मुबाशरत की चाहत

बहुत होती है। शौहर को उन अयाम में जरूर मुबाशरत करनी चाहिये, ज्यादा से ज्यादा उन दिनों में जरूर रोज मुबाशरत करे । अल्लाह उल कवी कुव्वत व ताकत दें तो उन दिनो में मुबाशरत करने से वह रगबत का दिन भी मालूम हो जायेगा।

लड़का पैदा होने के लिये ये तजुर्बात है

लड़का और लड़की पैदा होने के लिये मनीअ की कुव्वत जानी जाती है कि अगर शौहर की मनीअ औरती की मनीअ पर कुव्वत रखती है तो लड़का होगा और औरत की मनीअ गलबा रखे तो लड़की का हम्ल कायम होता है।

अकसर लड़के की पैदाईश औरत के रहम की दाहिनी तरफ होती है और लड़की की बायीं तरफ होती है उसके बर खिलाफ भी हो सकता है। मगर बहुत कम।

बाज हुक्मा ए इकराम ने ये भी फरमाया है कि मर्द औरत में से जिसकी मनीअ रहम में पहले पहुंचेगी कि अगर मर्द की मनीअ औरत की मनीअ से पहले पहुचेगी तो लड़का होगा और अगर औरत की मनीअ पहले पहुचेगी मर्द की मनीअ बाद को तो लड़की होगी।

और मर्द औरत में जिसकी मनीअ कलील व रफीक होगी यानि थोड़ी और पतली चाहे बाद कि चाहे पहले पहुंचे तो नर मादा का यही फर्क हो जायेगा। जब औरत से हैज़ से फारिग हो जाये उसी रोज मुबाशरत करें तो लड़के का हम्ल ठहरता है और अगर दूसरे दिन मुबाशरत करें तो लड़की का हम्ल ठहरता है। और तीसरे दिन मुबाशरत करें तो लड़के का हम्ल ठहरता है। इसी तरह चौथे दिन लड़की का, पांचवे दिन लड़के का, यानि अगर ताक दिनों में मुबाशरत से लड़के का हम्ल ठहरता है और जुफत दिनों में मुबाशरत से लड़की का हम्ल ठहरता है ताक व जुफत का हिसाब औरत के हैज के पाक होने के दिन से लगेगा।

इन तदबीरों के साथ साथ कुछ दवाऐं भी इस्तेमाल की जाती है किअगर उनको इख्तयार किया जाये तो इन्शाअल्लाह लड़के का हम्ल करार पायें औलाद के ख्वाहिशमंद उस दवा को इस्तेमाल करने के लिये खत व किताबत कर सकते है, या मुलाकात , पता ये है:

मुफ्ती मोहम्मद अशरफ, आफिस न0 281

ए0 ब्लाक, बी0 टी0 ए0 ले आउट, एच0 एम0 रोड क्रास, चर्च स्ट्रीट लिंगराजपुरम, बंगलौर , कर्नाटक, इण्डिया– 560 084 फोन– 080–5489093

Md. Ashraf, H.M. Road cross, Street, Lingarajpuram, Banglore-560-084 Karnataka, India

Phone. 080-5489093

इंसान सबब इख्तयार करके अच्छी औलाद पैदा कर सकता है

हमने ये बात मुख्तलिफ मकामात पर अपनी किताब "पोशीदा राज़" में भी कही और पीछे भी अर्ज की है कि आदमी का अकीदा सही हो कि ये दुनियादार आला सबब है । अल्लाह मु स ब ब आला सबाब इंसान मसई आला सबब है इंसान अगर चाहे तो मुसबब आला सबब से रजूअ होकर सबब इख्तयार करके अच्छी अच्छी औलाद पैदा कर सकते है और अल्लाह तआला को मुकम्मल इख्तयार है कि अगर वह चाहे तो इंसान के सबब को जानदार बनाकर नवाज़ दे।

सब कुछ अल्लाह तआला की कुदरत कामिला व हिकमत बालिग़ा पर मुनहसर है जैसा कि हम ने तहरीर किया है अल्लाह

तआला गलत अकीदों से से हिफाजत फरमाये. मुतअला फरमाये. हजरत इमाम फाजि' नजमुद्दीन हसफी ख्वारजमी की साहिबजादी के एक ऐसा बच्चा पैदा हुआ कि सर उसका मस्ल आदमी का था और बाकी बदन सांप की तरह वह बच्चा मां का दूध पीकर होज में बैठ जाता कुछ वक्त इसी तरह गुज़रा , उसके बाद हजरत मुफ्ती व काज़ी वक्त ने उसका कत्ल होने का फतवा दिया , बहरहाल उसको कत्ल कर डाला जब उस बच्चे के बारे में मालूम किया गया तो साप का खौफ बवक्त अनाज़िल होना बयान किया उसके अलावा दूसरी वजह ना बताई, इस वाकए को सामने रखकर हर इंसान इबरत व सबक हासिल करे और अनाज़िल के वक्त अच्छा तसव्वुर लाकर औलाद के अच्छे होने का ख्याल लायें।

दूसरा अजीब वाकेआ

एक ऊंचे दर्जे की औरत अपने महल में शान व शौकत के साथ बैठकर अपने पांव में सुई और रोशनाई से कुछ नक्श व निगार गोद कर लिख रही थी उस खातून औरत के शौहर ने देखा और हंस कर पूछा ये क्या बेकारी की जहमत तकलीफें उठा रही हो बीवी ने जवाब दिया इसलिये ताकि मेरे पैदा होने वाली औलाद के भी यही निशान निकल आवें , और मेरी औलाद के पास मेरी निशानी रहे, कुछ अरसे बाद एक लड़का पैदा हुआ उसके पांव में भी निशान मौजूद था । ये लड़के थे हज़रत मोहम्मद जलालुद्दीन अकबर बादशाह गाज़ी और खातूने उनकी वालिदा मुहतरमा थी, ये भी एक सबक आमूज वाकिआ है उससे सबक हासिल कर लेना चाहिये।

तीसरा अजीब वाकिआ

एक खातून तस्वीर दार कपड़े पहनकर रोज़गार कारोबार किया करती थी. उसको बार--बार हिसाब व किताब करने का इत्तेफाक

होता था। उस खातून की भी यही चाहत थी कि मेरी औलाद हिसाब व किताब में एक ऊचा मकाम रखे, कुछ अरसे के बाद उसके एक बच्चा पैदा हुआ, जिसका नाम जैरागोलबरन था जो हिसाब में बहुत ऊंचा गुजरा है तमाम इल्म रियाजी रखने वाले उनसे वाकिफ है।

चौथा अजीब वाकेआ

एक औरत के बिल्कुल काला स्याह लड़का पैदा हुआ, उसको शौहर को अपनी बीवी से बदगुमानी पैदा हो गई और अदालत तक जाने की नौबत पैदा हो गई।

अदालत ने कुछ हकीमों को बुलाया और हकीमो से उस बारे में तहकीकात ली, तहकीक से औरत का कसूर साबित नही हुआ फिर तहकीक व तफशीश की गई तो पता चला कि बेडरुम में एक हब्शी स्याह फाम की तस्वीर लटकी हुई थी जिसको अकसर देखने से ऐसा बच्चा पैदा हुआ जो मसल हब्शी का था।

अहल कलम ने इस उसूल को माना है कि हम्ल के शुरु में दोनों में या पहले जिस तरह के असर मां के जरिये बच्चे पर डाल सकते है वह पड़ता है ख्वाह वह असर जिस्मानी हो या अखलाकी या रुहानी।

पांचवा अजीब वाकेआ

यूनान के बादशाहों में से एक बादशाह हुआ इन्तहाई काला कलूटा और बुरी औरत का था। उस बादशाह की चाहत थी कि मेरे यहां एक बच्चा पैदा हो जो शक्ल व सूरत का खूबसुरत हो । इस मकसद के लिये उसने हकीमों जालीनूस से जो उस जमाने का सबसे बुड़ाना अमूर हकीम था अर्ज़ किया तो हकीम जालीनूस ने मशवरा दिया कि तीन अच्छी तस्वीरें बनाई जायें और घर में तीन जानिब रख दी जायें और बीवी को कहो कि वह इन तस्वीरों को

देखा करे और बादशाह ने हकीम साहब के कहने के मुताबिक अम्ल किया, फिर उस बादशाह के यहां इन्तहाई खूबसुरत लड़का पैदा हुआ।

इस वाकेए में तस्वीर लगाने का जिक्र है। मगर हदीस शरीफ में आता है कि जिस जगह जानदार की तस्वीर फोटों होता है उस जगह अल्लाह की रहमत के फरिश्ते दाखिल नही होते इसलिए मुहम्मद अशरफ अमरोही मशवरा देते है कि मुबाशरत के वक्त अच्छी सूरत व सीरत का ख्याल तसव्वुर बांधा करें ताकि औलाद भी अच्छी सीरत व सूरत की पैदा हो।

छठा मुफीद वाके़आ

उलामा इमाम फखरुद्दीन राज़ी रह0 अल0 के वालिदैन बा वक्त इनाज़िल अच्छी शक्ल व सूरत सीरत का तसव्वुर करते हालांकि वह खुद खूबसुरत नही थे जिसका नतीजा ये निकाला इमाम फखरुद्दीन राज़ी अच्छी शक्ल व सूरत के पैदा हुए लोग भी हैरान हुए और तआज्जुब किया कि और निहायत खूबसुरत पैदा हो लोग वालिदैन के हुस्न व जमाल के तसव्वुर से बे ख्याल थे, अल्लाह तेरी शान अजीब तर तेरी कुदरत अजीम तर।

ये हर ज़ोवजैन की ख्वाहिश होती है

हर वह इंसान जो औलाद वाला बनना चाहता है और अल्लाह तआला उन को औलाद इनायत करे वह ज़रुर उस बात के आरज़ूमंद होते है कि उसकी औलाद नेक हो, बुरी न हो, अक्लमंद हो, बे अक्ल न हो, तंदरुस्त हो, बीमार न हो, हंसमुख हो, तरश रो न हो, खूबसुरत हो, बदसुरत न हो, चुस्त हो, सुस्त न हो, चालाक हो बुद्धु न हो, ताकतवर हो, कमज़ोर न हो, फरमाबरदार हो, नाफरमान

न हो, फयाज़ हो, बखील न हो, या अखलाक हो, बद अखलाक न हो, या आदाब हो, बे अदब न हो, सच्ची हो, झूठी न हो, लेकिन कुछ लोग ऐसे होते है कि साहब औलाद होने के बावजूद अपनी औलाद को ऐसा बनाने की कोशिश करते है? जैसा कि यह उनके बनने की आरजू करते है। लेकिन जाहिल व गाफिल होने की वजह से उन चीज़ों पर कुछ भी समझ नही रखते ।

ये सोचने व अम्ल करने की बात है

आज वह जमाना है कि तहज़ीब ख्याल किये जाने वाले मुल्कों में जानवरों की नस्ल को तरक्की देने और कोशिश करे उम्दा फल व फूल पैदा करने के सिले में ईनाम दिया जाता है । पौधों, दरख्तों, व जानवरों की हालत में तरमीम व तबदीली करके व इसलाह करके बडी बड़ी नुमायश व जलसे किये जाते है। तो क्या इंसानों के बच्चे की हालत की इस्लाह के लिये जिस को इशरफुल मखलूकात होने का फख्र हासिल है, वह कुछ भी न करे लिहाज़ा ज़रुरी है हम्ल ठहरने के वक्त से ही कि उसी वक्त से बच्चे की फितरत की बुनियाद पड़ती है और उस बच्चे की तबियत व खसलत व शक्ल व सूरत पर असरात पड़ने शुरु हो जाते है।

अन्दाज़ ए ज़िन्दगी क्या हो ?

जो लोग सेहत की हिफाज़त के उसूल की पाबन्दी करते है कि खाने पीने में एतदाल हो, महनत व आराम में वक्त की पाबन्दी हो, सफाई व सुथराई, में बदन व रुह की पाकीज़गी का ख्याल रखें, तो उनकी औलाद तन्दरुस्त व हसीन जमील पैदा होती है।

शादी कहां करें ?

शादी कहां करें ? उसका पूरा जवाब तफसील से "पोशीदा राज़" किताब में लिख दिया है चूंकि ये बात बहुत अहम है, मुख्तसर

अल्फाज़ में इशारा करता हूं कि ज़ोवज़ैन मुख्तलिफ मिजाज के हों और निहायत लियाकत मंद हो और मुख्तलिफ कौम मुख्तलिफ नस्ल के हों तो उनसे औलाद ज़्यादा लायक पैदा होती है बर खिलाफ नज़दीकी रिश्ते दारी से औलाद आमतौर पर अच्छी सेहतमंद नही होती।

अय्याशी पन अच्छा नही है

जो लोग अय्याशी और बे एतदाली की ज़िन्दगी इख्तयार करते है उनकी औलाद पैदा ही नही होती और अगर होती भी है तो खूबसुरत लियाकत मंद पैदा नही होती और खूबसुरत लियाकत मंद पैदा होने के लिये ज़िन्दगी को एतदाल के साथ इख्तयार करना चाहिये जैसा कि मैंने अर्ज़ किया था कि ऐश परस्तों के यहां लड़कियां ज़्यादा पैदा होती है, ये सही तजुर्बा की बात है कि ऐश परस्त लोग लड़को की नेमत से महरुम रहते है।

मुबाशरत के वक्त की हालत

मुबाशरत उस वक्त करनी चाहिये जब दिल व दिमाग सकून से राहत हो, या कोई बड़ा सदमा रुह या बदन में ऐज़ा रसाल न हो, तो ऐसी हालत की मुबाशरत से जो हम्ल ठहरेगा उसका नतीजा बहुत उम्दा होगा, और अगर खौफ वह दहशत व मायूसी रजं व गम सवार होने के वक्त की मुबाशरत से नतीजा भयानक व खौफनाक होगा, और मुबाशरत की हालत में ज़ोवजैन तन्दरुस्त न हो तो औलाद की सेहत खराब होने के लिये इतना ही काफी है।

इस बात का ख्याल रखना चाहिये

जो लोग रातों को जागने के आदी है, टी० वी० वगैरहा का मुनाज़रा देखते है या दोस्तों की महफिलों में रातों को बहुत देर तक बैठे रहते है और नींद व थकन में मुबाशरत करते है तो उनकी

औलाद कमजोर बदन और कम अक़्ल पैदा होती है। इसी तरह शराब पीने वाले और नशा करने वाले की नशा की वक्त की मुबाशरत से पैदा होने वाली औलाद बे अक्ल दीवानी या मिर्गी की बीमारी में गिरफ्तार होने वाली पैदा होती है, उसके बर खिलाफ रुह में तरो ताज़गी पैदा करने के मकाम पर या चमन ,दिल बहार मकाम पर मुबाशरत से जो औलाद होती है वह हसीन व जमील पैदा होती है।

ख़ूबसुरत औलाद पैदा होने का सबक़

हामला औरत को ज़रुरी है कि वह शुरु हम्ल से हसीन व जमील शख्सी की तस्वीर पर अपनी करीब रखे कि वह हसीन व जमील भी हो अच्छी सीरत व होशियार , अक्लमंद भी हो, मुबाश..। के वक्त खास तौर पर अनाज़ल कयोकत व तसव्वुर करे, उसकी मुनासबत से उसकी दिलरुबाई पर उसकी फरारत पर बड़ा ख्याल जमाती रहे और उसका तसव्वुर करते करते ऐसा नक्श जमा लें कि गोया वह उसके बदन का एक हिस्सा बन गया है तो नतीजा ये होगा कि बाग उम्मीद है ऐसा ही पैदा होगा।

ज़रुरी मसला किसी जानदार की तस्वीर पर लेना, बनाना, रखना, शरीअत इस्लाम में मना है, और उस मसले की वजाहत अपने उलेमा कराम से मालूम करें, कि सिर्फ चेहरे का फोटो लेना कैसा है? वगैरहा वगैरहा ।

इन्तहाई मुफीद सबक़

अगर औलाद को हकीम, डाक्टर, आलिम, फाज़िल, वगैरहा बनाना हो तो औरत को हम्ल के शुरु अय्याम में ही दिन रात उसी तरह की किताबों का मुताअला करना चाहिये, जिस नज़रयात का ख्याल है और अपनी पूरी तवज्जों उसी तरफ फेर दे और भी बातों को खूब समझों मसलन अगर बच्चे को हिसाब दां बनाना है तो हम्ल

के जमाने में वलादत तक हिसाब व किताब का मशगला रखें।

अगर बच्चे को दिली सिफत बनाना है तो हराम अशया से बिल्कुल परहेज करें, कुर्आन मजीद की तिलावत ज्यादा करें, और हामला औरत अकसर बा वजू रहें, सीरत रसूलल्लाह स० अ० व० व सीरत साहेबा रजि० अ० अजमईन पर गहरा मुताअला करे, बुजुर्गान दीन औलिया अल्लाह की जिन्दगी और उनके तकवे को मुताअला में लाये, दिल की हर किस्म की कुदरत से पाक रखे, सुन्नतों की पाबन्दी से भरपूर अहतमाम हो तो जरुर अल्लाह तआला ऐसी औरत की गोद से दिली सिफत पैदा फरमायेगा। और अगर अपनी औलाद को बहादुर बनाना है तो नबियों व रसूलल्लाह व सहाबा कराम वलियों व बहादुरों की बहादुरी के बाकी से मुताअला करें, आपका बेटा भी मुजाहिद व बहादुर बनेगा। अगर अपनी जैसी औलाद होने की तमन्ना है तो हामला औरत अपनी सूरत रोजाना सोकर उठने के बाद शीशे व आयने में देखा करें।

मजीद कुछ तफसील "पौशीदा राज" मे मुताअला करें, फकत व सलाम।

जादू की वजह से औलाद से महरुमी

बाज़ लोगों को औलाद से महरुमी सहर की वजह से होती है। यानि कोख बंधवा दी जाती है जिसकी वजह से हम्ल नही ठहरता है हालांकि तन्दरुस्ती के ऐतबार से ज़ौवजैन बिल्कुल सही होती है और ऐसी हालत में कोई डाक्टरी, ईलाज भी कारगर नही होता, कि दवा के जरिये बंदिश खत्म हो और ये कोख बन्दी कई तरह की होती है। जिसकी मुख्तलिफ अलामतें है। एक अलामत होती है कि शौहर की मनीअ औरत को छूने से पहले ही निकल जाती है या कभी ऐसा होता है कि शौहर को मुबाशरत के वक्त औरत का दबदबा व रुआब चढ जाता है या आला तनासुल में इन्तशार ही पैदा नही होता,

वगैरहा वगैरहा।

इसलिए उसका ईलाज किसी अच्छे आमिल से करायें जो कि अकीदे व इल्म व अम्ल का सही हो, ज़रुरत पड़ने पर मुझ से भी राब्ता कायम कर सकते है लेकिन शौहर का नाम उसकी मां का नाम, बीवी का नाम, उसकी मां का नाम, और कितने साल से है लिख कर रवाना करें जवाबी खत में पता ये है–

Md. Ashraf, Off No. E Block B.D.A. Layout H.M. Road, Cross,Church Street.
Lingarajpuram, Banglore-560-084 Karnataka, India Phone. 080-5489093

हामला औरत को बहुत अहतियात की ज़रुरत है

जब औरत को हम्ल ठहर जाये अपनी हिफाज़त के साथ जनीन का भरपूर ख्याल रखे, मसलन हमल की हालत में ज्यादा गर्म अशया या ज्यादा ठण्डी चीज़ें न खायें।

तजुर्बेकार हकीम कामिल के मना करने पर रोज़े न रखें, अगर व नुकसान बतायें और हमल की हालत में देर हज़म गिज़ायें खाने से और कय करने से और जुलाब लेने से और तेज़ रफ्तार चलने से और उलटा सोने से इसलिए उस हरकत से बच्चे जनून या मिर्गी वाला पैदा होता है। ज्यादा सोने से बच्चा मोटा और गूंगा पैदा और मर्ज़ जिरयान वाला पैदा होता है और बहुत ज्यादा खट्टा खाने से जज़ामी पैदा होता है और मुस्तकबिल बहुत ज्यादा नमकीन खाने से सर की बीमारी वाला पैदा होता है बुरे काम करने से बुरा अच्छा काम

करने से अच्छा पैदा होता है।

बहारहाल हामला औरत को उन चीज़ों से बचना चाहिये। शिद्दत फअल मुबाशरत यानि हरकत की ज़्यादती से, वज़न उठाने से रंज व ग़म व गुस्से न करे, इस्तनजा व बैतुलखला की हाजत रोकने से और हामला औरत को जिन दिनों में हैज आता था उन दिनों में बहुत अहतियात रखनी चाहिये, अगर उन दिनों में वे एतदाली की तो हम्ल गिरने का सख्त अंदेशा है। हामला औरत को रोज़ हज्म और मकवी खाना खाना चाहिये और हालत हमल में चने, तिल, व वहशनाक आवाज से और बू सूंघने से और जो चीजें जनीन को हरकत में लायें उनसे बचना चाहिये और किसी बीमार की कराहट और रुह निकलने की हालत को न देखे, वहशत पैदा करने वाली तस्वीरों से दूर रहें, गन्दगी हवाओं से बचें, कब्ज न होने दे, अगर कब्ज हो जाये तो तेज असर दवा इस्तेमाल न करें, बल्कि दूध में शीरीं बादाम का तेल दस माशा डाल कर पीयें, या गुलकंद इस्तेमाल करें, और ईलाज करायें, बहुत कम मजमून पर खत्म करके उस किताब को पूरा करने का इरादा है बला खरनू महीने में हामला की गिजा–

जब हामला को नवां महीना शुरु हो जायें तो हामला हर दिन दस माशा रोगन बादाम शीरीन, सुबह के वक्त पी लिया करें, चिकनी रोगनी गिजाएं ज़्यादा खायें, इन्शाअल्लाह तआला वलादत बड़ी आसानी से होगी।

विलादत की आसानी के लिये कामयाब अमल

विलादत की आसानी के लिये नायाब मुफीद अम्ल है कि थोड़े से गड़पर अमीस्ता, और वालस्मा, व तारिक पूरी सूरत पढ़कर हामला

को खिला दें आधे घण्टे के अंदर अंदर बच्चे की विलादत हो जायेगी और तकलीफ न होगी।

अगर इस सिलसिले में मजीद अमलियात देखना हो तो हमारी किताब "पोशीदा ख़ज़ाने" जो अमलियात की किताब है, मुताअला करके फैज उठाएं, किताब दस्तयाब न होने पर मुझे इत्तेला दें। पोशीदा खज़ाने 40/–रुपये उसका हदिया है।

जिस औरत के मुश्किल से विलादत होती है

बच्चे की विलादत में जिस औरत को बहुत ज़्यादा दुश्वारी होती हो और दर्द हो तो ये गोली खिलाएं, निहायत मुजरिब और मेरी आज़माई हुई है और इन्तहाई मुफीद है जाफरान चार माशे, पीसकर गाढ़े में मिलाकर पिलाएं और ऊपर से गर्म पानी या दुध पिलाएं और अगर हो सके तो गोली के ऊपर मुर्ग के गोश्त का शोरबा पिलाएं तो बहुत जल्द विलादत हो जाती है।

हम्ल से रोकने की तदबीरें व तरकीबें

बाज मर्तबा ऐसा होता है कि मर्द को ख्वाहिश ज़्यादा है और औरत को कम बीवी इन्तहाई जईफ व नहीफ है या औरत कम उम्र है या उसकी जान को खतरा है और उस बात का खौफ है कि अगर मुबाशरत करोगे तो हम्ल ठहरेगा और जब हम्ल ठहर जायें तो औरत बीवी हलाक हो जायेगी। या दुध पीता बच्चा गोद में उस हालत में मुबाशरत करने से हम्ल ठहर जायेगा और जब हम्ल ठहरने से दुध खराब हो जाता है। तो बाज़ मर्तबा बच्चा दुध पीकर मर जाता है और शौहर मुबाशरत करने से मजबूर है तो शौहर को चाहिये कि

उस तरह पर मुबाशरत करे कि हम्ल न ठहरें और शहूत की आग ठण्डी हो जायें ।

हामला न होने की तरकीबें

यह शक्लें व तरीकें जिससे मुबाशरत करने से औरत हामला नही होती है मुबाशरत के वक्त औरत को न बहुत लिपटाऐं न चिमटाएं न नुकते बाजी छेड छाड करें ताकि औरत की तबियत चाहे न उसकी रानों को ऊंचा उठायें अनाज़ल के वक्त जहां तक हो सकते आला तनासुल को बाहर की तरफ निकला हो, और इस बात का भी ख्याल रखें, कि दोनो का अनाज़िल एक साथ न हो, और अनाज़िल होने के बाद जल्दी अलग हो जाना चाहिये, औरत भी जल्दी खड़ी हो जायें और सात मर्तबा आगे की जानिब कूदे और छींक लें ताकि मनीअ बाहर निकल जायें, साढ़े सात तौला अरक तुलसी पी लिया करें तो हम्ल न ठहरेगा।

बाज़ हुकमा ने बयान किया है कि मनीअ के फूलों को पानी में घोंट कर माहवारी के बाद पी जाया करें, तो हम्ल न टिके, अगर शौहर मुबाशरत से पहले आला तनासुल पर नीम का तैल लगा लिया करें तो फिर मुबाशरत करें तो हम्ल नही ठहरेगा। अगर औरत आंख बंद करके अरण्ड का एक दाना हैज के फारिग होने के बाद खाले तो हम्ल न ठहरेगा।

नसबन्दी कराने से मुताअल्लिक लब कशाई

नसबन्दी बायें मअनी करना कि अफलास व तंगदस्ती का खौफ रखे कि फाखा कशी का मुंह देखना पडेगा और राहत आराम व ऐश

व इशरत में फर्क व कमी आ जायेगी तो ये हराम है इसलिए कि अल्लाह तआला ने खुद इरशाद फरमाया है कि "नहन नरज़ुकुम व आयाहुम" एक दूसरी जगह इरशाद फरमाया है "नहन नरज़ुकुम व आयाहुम" मतलब ये है कि हम तुम्हें भी और तुम्हारे पैदा होने वाली औलाद को भी रिज्क हम देगें। बल्कि अल्लाह तआला का जिस तरह अल्लाह नाम है उसी तरह का नाम रिज़्क भी है। यानि रिज़्क देने वाला तो रिज्क देने की जिम्मेदारी तो खुद उसने ली है बल्कि खुद अल्लाह तआला का इरशाद है कि तमाम चौपाईयों जानदार जानवरों को रिज्क देने की जिम्मेदारी ली है। बच्चें मां के पेट में तशरीफ लाने से पहले ही उसका इंतज़ाम कर दिया जाता है । इस बुनियाद पर नसबन्दी कराने हम्ल होने से रोकवाना मना है। उसके जज़ियात की तफसील व तशरीह अपने उलेमा कराम व मुफ्तयान अजाम से मालूम करे वरा मैं तो सिर्फ इतना अर्ज़ करता हूं कि नसबन्दी कराके बच्चे दानी निकलवा कर बहुत सी मर्तबा ऐसा होता है कि जो औलाद पैदा हुई थी वह मर गई फिर उस औरत में हम्ल ठहरने की सलाहियत नही रही, या बाज़ मर्तबा ऐसा भी हुआ है और हो सकता है कि उस नसबन्दी की हुई औरत के शौहर का इंतकाल हो गया अब उस औरत का निकाह सानी की मोहताजगी वाकए हुई और दूसरा शौहर उन बच्चों को साथ में लेने को तैयार ही नही है अब उस दूसरे शौहर को औलाद की जरुरत होती है उसने पहले शौहर की मौजूदगी में नसबन्दी करा ली है औलाद होने की सलाहियत वासतअद उसमें बाकी नही रही उस मौके पर अल्लाह तआला की नज़रों से भी गिरी और अपने दूसरे शौहर की नज़रों से गिरी औलाद भी दूर हुई, इन मौकों को सामने रखते हुए और नतीजे के पेशे नजर गौर करना चाहिये ताकि रुसवाई और गुनाह से बचा जा

सके .हम्ल से बचने के आरजी व वक्ती असबाब इख्तयार किये जा सकते है जिनकी मुख्तलिफ तदबीरें है और मैंने उनको तफसील के साथ लिख दिया है , अब मेरे अरहमर्राहिमीन से दुआ है कि अल्लाह रज्जाक हमें अपने वादों पर यकीन कामिल फरमाये. दोनों जहां की जिल्लत व रुसवाई से बचाकर अमन व अमान व सलामती व सुर्ख़ रुई अता फरमायें आमीन या रब्बुल आलिमीन।

बार बार हम्ल गिरना

बाज़ औरतों को हम्ल गिरने के सबब असरात जिन्नाती व शैतानी होते है और वह औरतें मजबूर और तंग होकर गलत सलत उलटे किस्म के टोने टोटके करती व कराती है . बिअदत व शिर्क को इख्तयार कर लेती है और अगर वाकई असरात की बुनियाद पर हम्ल गिरता हो तो उसका ईलाज करायें, सही ईलाज न होने पर या न कर सकने पर मुझसे तआल्लुक कायम फरमायें।

जरुरी नोट– खत व किताबत करने वाले हजरात अपना पता साफ पिन कोड नम्बरों के साथ जवाबी खत डाले और मजनूना खातून का नाम और उसकी मां का नाम लिखकर रवाना करे ताकि ईलाज करने में दुश्वारी न हो।

हम्ल किस तरह ठहरता है व जनीन की हालत

जब मर्द औरत को एक साथ अनाजिल होता है तो हम्ल ठहर जाता है और दोनों की मनीअ मिलकर एक मिजाज पैदा करती है फिर उससे चार नुक्ते हयात के मानिंद ज़ाहिर होते है एक दिल की

जगह, दूसरा दिमागकी जगह, तीसरा जिगर की जगह, और चौथा नुकता उन तीनों को घेर लेता है ये शक्ल एक हफ्ता में तैयार होती है बात मुख्तसर करता हूं।

अगर लड़का है तो जल्दी और लड़की हो तो देर में पैदा होती है जनीन बच्चे दानी में दोनों जानों पेट से मिलाए हुए बैठा रहता है। दाहिनी हथेली दाहिने ज़ानों पर सर दोनों ज़ानों पर रखे हुए होता है उस तरह कि नाक दोनों ज़ानों के दरम्यान होती है और पांव की एड़ियां खड़ी होती है, मुंह मां के पेट की तरफ होता है।

मां के पेट के अन्दर के बच्चे को जनीन कहते है . औरत की मनी में छोटे छोटे केसे होते है और मर्द की मनीअ में छोटे छोटे करम होते है । ये जब दोनों मिल जाते है तो हम्ल ठहरता है और मर्द की मनीअ का कीड़ा औरत के केसे में घुस जाता है और वहीं गायब होकर अल्लाह तआला की कुदरत से नुतफा करार पा जाता है उसी को हम्ल ठहरना कहते है। सेहत के सही होने के साथ साथ उसमें जान पड़ती है और बढ़ते बढ़ते आज कुछ कल कुछ होकर इंसान की शक्ल इख्तयार कर लेता है । सुबहानल्लाह क्या खालिक जुलजिलाल की शानों शौकत है कि एक नापाक कतरे से कैसे खूबसुरत खुश शक्ल इंसान को अजीब खलकत से पैदा फरमायाया और फिर खुद ही फरमाया "लकद खलकनल इंसान फिह अहसान तकवीम" हमने इंसान को बेहतरीन सांचे में पैदा किया है, यानि ढाला है।

वे इख्तयार उसका मुंह चूमने को दिल करता है जिसको हजरत शेख सादी अ० र० ने खूब फरमाया है दहद नुतफा रा सूरत चूं परी कि करदास्त बर अब सूरत गिरी।

मनीअ यानि तख्म इंसान की पहचान

मनीअ यानि जिससे बच्चे पैदा होते है या इंसान का तखम कहो तो उस मनीअ की पहचान ये है कि मर्द की मनीअ गाढी लसदार

और चिपकी होती है और सफेद रंग की होती है और चमकदार होती है अगर किसी कपड़े पर गिर जाये तो मक्खियां उस पर बैठती है और चाटती है, मनीअ की बू चमेली के ज़र्द फूलों की सी होती है यही मनीअ की पहचान है । अगर मनी ऐसी न हो जैसे हम ने बताया तो समझ लो मनीअ में कमी है । फिर ये मजकूरा अलामत पैदा करने के लिये ईलाज कराना चाहिये। और औरत की मनीअ पतली होती है गाढी नही होती , जर्दी माएल होती है सफेद नही यानि औरत की मनीअ में पतला पन और पीलापन होता है।

एक गलत फहमी की सफाई

बहुत से लोग औरत की मनीअ को मानते ही नही, हालांकि सच व हक बात ये है कि औरत की मनीअ भी होती है और औरतों को भी अहतलाम व अनाजिल हीं की वजह से अनाजिल होने के बाद मर्द की तरह औरत के भी जज्बात ठण्डे पडते है जिस तरह मर्दों के खिस्से होते है औरतों के भी खिस्से होते है अगर औरतो की मनीअ नही होती तो औरतों की खिस्सों की पैदाईश बेकार हो जाती, मनीअ ही की वजह से औलाद कभी बाप की कभी मां की शक्ल पर होती है । कुरान करीम से "अलनिस्सान मिम खलक मिन माअ दाफिक यखरुज मिन बयनिल सलबी वलतराईब" इंसान को इस बात पर गौर करना चाहिये ये इंसान एक उछलते हुए पानी से बनाया गया है, यानि मनीअ से जो मर्द की पीठ से और औरत के सीने से निकलता है।

यही वजह है कि बाप का जो एज़ा कमज़ोर होता है, बेटे का भी अकसर वही ऐज़ा कमज़ोर होता है ये उस वजह से है कि मनीअ तमाम एज़ा टपक कर आती है।

ज़ौवजैन की मनीअ से औलाद बनती है

तजुर्बा कारों का कहना है कि मनीअ के कीड़ें अनाज़िल होने के कुछ देर बद तक ज़िन्दा रहते है खास तौर पर औरत के एजा मखसूस के अन्दर बहुत देर तक ज़िन्दा रहते है, मतलब ये है कि जब मर्द की मनीअ के कीड़े औरत के कीसे से मिल जायेंगे तो हम्ल ठहर जायेगा।

अगर औरत बे हया हो जाये

अगर औरत बे हया हो जाये या ख्वाहिश का बहुत भड़काऊ हो जाये और शौहर से ख्वाहिश पूरी न होने की वजह से नाराज़ रहती हो या गलत नज़र गैरों पर उठाती हो कि फाहेशा बन जाये तो उस दवा से ख्वाहिश की आग बुझाऐ। और हया के पर्दे में छिपायें । इज़्ज़त की हिफाज़त करें, और करवायें, फिटकरी और बेरियां शुदा शर्बत मसरी से हर रोज़ पिलाया करें, फिर मुझ से मुलाकात करें, या खत व किताबत करें, मुसन्निफ़ किताब "तन्हाई के सबक"

हकीम मुफ्ती मोहम्मद अशरफ अमरोही

मुकीम हाल बेंगलौर 84– शहर फोन– 080–5489093

छाती और दूध से मुताअल्लिक कुछ मुफीद मालूमात

जब आदमी जवान होता है तो छातियों में गिरह सी पड़ जाती है मर्दों में हरारत की वजह पिघल जाती है ,औरतों में हरारत कम होने की वजह से और हैज़ की कसरत की वजह से उभर जाती है

और रोज़ बरोज़ उभार होता रहता है यहां तक कि बच्चों के रिज़्क का चश्मा बन जाती है।

एक छोटा सा लतीफा

किसी ने पूछा उस मे (पिस्तानों) में क्या है? तो जवाब देने वाले जवाब दिया गिज़ाए तफल (बच्चे) व शहूत का मज़ा।

बहारहाल दूध और मनीअ और खून ये तीनों सूरत में अलग अलग है मगर तीनों की पैदाईश का सबब एक है, इसलिए कि दूध और मनीअ की हकीकत मे खून है मगर अपनी अपनी जगह में सूरतें बदल जाती है इसलिए अगर किसी मस्तूरात का दूध कम हो जायें जिसकी वजह से बच्चे बखूबी परवरिश नही पाता तो उसकी वजह यही है कि बदन में खून कम है या औरत को अच्छी गिज़ा नही मिल रही है या हैज व निफास ज़्यादा मिकदार में जारी रहता है । या औरत हमेशा गम व परेशानी मे मुब्तला रहती है । इन तमाम असबाब को देख कर ईलाज करना और कराना चाहिये या उसी तरह किसी औरत के दूध ज़्यादा हो जाने से बाज को दूध खुद ब खुद बहने लगता है और दर्द भी होता है खास कर जब कि हैज़ रुका हुआ हो तो उन सूरतों में पहली सूरत के ब मुकाबिल आला ए असबाब होते है, मसलन खून की ज़्यादती या हैज़ व निफास का रुक जाना वगैरहा के असबाब पर गौर करके ईलाज किया जाता है।

हैज़ के मुताअल्लिक कुछ ज़रुरी मालूमात

जैसा कि मैंने ज़िक्र किया कि हैज़ के दिनों में मुबाशरत करना हर ऐतबार से इन्तहाई नुकसान दह है। शरीइत इस्लाम में हैज़ में मुबाशरत करने को हराम कहा है। ये हैज़ एक किस्म का पतला

बहने वाला खून होता है। हैज के खून में एक किस्म की बू होती है और दूसरे खूनों के मुकाबले में उसका वजन हलका होता है । हैज के खून का रंग किस कद्र लाल सुर्ख होता है और सफरावी मिजाज़ की औरतों का गाढ़ा और काला मायल होता है जब हैज पहली बार मर्तबा आता है तो चेहरा चांद की तरह चमकीला बदन सूडोल, आवाज सूरीली, चाल मे कशिश आ जाती है और पिस्तान बढ़ने लगते है।

हैज का खून आम तौर पर बारह साल की उम्र से आना शुरु होता है और पैंतालिस साल की उम्र तक आता रहता है और किसी किसी औरत को पचास पचपन साल की उम्र तक आता रहता है। जिन दिनों औरत के हैज़ का खून बाकायदा आता है उन दिनों के जमाने को उम्मीद का ज़माना कहते है। यानि उन दिनों में हम्ल ठहरने की उम्मीद होती है और जब हैज़ आना बन्द हो जाये तो उन दिनों को यास का ज़माना कहते है।

बाकायदा हैज आना ये औरत के लिए खुशकिस्मती की अलामत है और बाकायदा आना ये बदबख्ती की बीमारियों की आलमत है उन हैज़ के दिनों में मुबाशरत करने से सख्त परहैज करना चाहिये वरना मुबाशरत करने से औरत को भी मर्द को भी शदीद नुकसान होता है ,हालत हैज वाली औरत को हर किस्म की सर्दी से बचना जरुरी है । यहां तक कि ठण्डे पानी में हाथ मुंह धोना, बारिश में भीगना, गीले कपड़े बदन पर रहना, उससे आता हुआ हैज़ का खून बन्द हो जाता है। और बहुत सी बीमारियाँ के पैदा होने का सबब होता है इसी तरह हैज़ के दिनों में खाने पीने में भी ज़्याद ठण्डी अशयां इस्तेमाल न करें।

हैज़ के दिनों में ज़्यादा दौड़ धूप महनत करने, बोझ उठाने, से भी बचें, इसी तरह ज़्यादा गर्म चीज़े खाने से भी बचना चाहिये जैसे ज़्यादती चाय, कॉफी, वगैरह वगैरह।

एक आम गलत फहमी

बहुत से लोग ये समझते है और गलत समझते है कि ये हैज का खून बच्चे दानी में बच्चे की गिजा होता है। ये बात सही नही है क्योंकि ये गंदा मादा है तबियत इससे नफरत करती है, बदन उससे कराहियत करता है। ये ऐसा घिनौना बेकार फुजला किसी बच्चे की गिज़ा हो सकता है जबकि बच्चे का बदन भी लतीफ मिजाज़ और बच्चे भी मासूम और बनावट भी जईफ .. कहां ये गन्दा मादा देने वाला और कहां ये बच्चे की गिजा ?

एक सच फहमी

हम्ल ठहरने पर ये हैज़ का खून माहवारी का खून बाहर आना रुक जाता है और उसके रुक जाने में ये फायदा है कि उस फुजले की वजह से बच्चा फिसल कर बाहर आ जाता है। यही से समझ लेना चाहिये कि अगर ये हैज़ का खून बच्चे की गिज़ा होता है तो बच्चे की विलादत के वक्त ज्यादा मिक़दार में क्यों आता है?

जनीन को गिज़ा मिलती है मां के बेहतरीन खून से और उम्दा खून से और जो गिजा के काबिल नही हो तो वह खून, खून हैज बच्चे के पैदा होने के वक़्त निकल जाता है। जिसको निफास कहते है। यही से समझ लेना चाहिये कि हैज़ के खून की तीन किस्में है उसमें जो सबसे पाक फिल्टर किया हुआ होता है वह बच्चे की गिज़ा के काम आता है, 2– वह खून जो दूध बनने के लिए औरत की छातियों की तरफ चला जाता है 3– वह खून जो विलादत के वक्त तक बन्द रहता है और विलादत के बाद निकलता है जिसको निफास कहते है।

ख़ास ज़रुरी मसला याद रखें

हर उस औरत को जिस को हैज का खून आता न हो, हम्ल नही ठहर सकता, और ये हैज कम से कम तीन रोज ज्यादा से ज्यादा दस दिन तक आता है और निफास के ज्यादा से ज्यादा चालीस दिन में , कम की कोई तादाद नही है। बच्चे के पैदा होने के बाद जब ये खून रुक जाये चाहे एक दिन में या एक हफ्ते में या एक माह मे या चालीस रोज मे, जब आना बन्द हो, उसी दिन से गुसल करके नमाज पढना जरुरी है। हमारे हिन्दुस्तान में अकसर ईलाके मे मसतूरात उस मसले को बिल्कुल नही जानती और वह चालीस दिन के इंतजार मे रहती है और उन नापाकी के दिनो मे औरत न नमाज पढ सकती है और न रोजे रख सकती है और न ही मुबाशरत की जा सकती है। चूंकि ये किताब मसाइल की नही है उन तमाम मसाइल को उलेमा कराम से मालूम करें, और ऊपर जो मसले मैंने जिक्र किया है उस किताब को पढने और सुनने वाले हजरात अपनी ख्वातीन को बतायें और वह दूसरों की रहनुमाई करें।

और ये हैज व निफास के खून का आना बहुत ज़रुरी है अगर किसी औरत को न आयें उसको ईलाज के लिये हकीम व तबीब से रुजूअ होना चाहिये।

आला तनासुल के मुताअल्लिक़ कुछ ख़ास मालूमात

आला तनासुल के अज़ू तनासुल और आला मर्दी और कज़ैब व ज़िक्र भी कहते है। लेकिन हम आला तनासुल को इख्तयार करते है।

जैसा कि "पौशीदा राज़" किताब मे भी यही इस्तेमाल किया गया है ये आला तनुसल मर्द के एज़ाओ मे से एक अजू है उसको अजू मखसूस भी बोलते है , मर्द के बालिग होने के बाद उस की कुव्वत व इन्तशार का जहूर मुकम्मल होता है। आला तनासुल और उसके इन्तशार का फायदा ये है कि मनीअ रहम में पहुंचती है जिससे बच्चा पैदा हो और पैशाब को बाहर निकाले, इस आला तनासुल मे हड्डी नही होती लेकिन मिस्ल हड्डी के सख्त हो जाता है। इस आला तनासुल मे कुछ गोश्त पोस्त , पट्ठे, मोटी और बारीक रगे, होती है। इस आला तनासुल की जड़े इधर उधर दो रगे है। जो पेट की हड्डी से जमी हुई होती है। एक इंच तक ऊपर तक आई हुई है । जिस वक्त मर्द के दिल में औरत की ख्वाहिश पैदा होती है। तो बड़ी रगो की शाखों से जो पेट मे है उन मे खून आता है और उससे वह तमाम रगें चौड़ी हो जाती है और दोनो रगे पेट के पास की दोनों तरफ से आला तनासुल को खींचती है जिसकी वजह से वह सीधा तन कर खड़ा हो जाता है।

आला तनासुल से मुताअल्लिक मुफीद सबक़

इसांन की गलत आदतों की वजह से आला तनासुल पर सदमा पड़ता है जिसकी वजह से ये आला तनासुल से सिवाए पैशाब करने के कोई फायदा नही होता उस गलत कामों की वजह से आला तनासुल की कमियों व नुकसानात को दूर करने के लिये आला तनासुल पर दवाएं लगानी पड़ती है और उसी से मुताअल्लिक दवाएं खानी पड़ती है। खाने वाली दवाएं व गिजाए पेट के अन्दर की रगों को तन्दरुस्त करती है और लगाने की दवाएं बाहर ऊपर से सुस्त रगों को चुस्त और मुर्दा रगों को जिन्दगी बख्शती है। इसी वजह से

मुताबिक 7-6 उंगल है। किसी शख्स की ज़्यादा लम्बाई हुई नही करनी चाहिये, हां अगर 7-6 उंगल कम हो तो ईलाज कराना जरुरी है जिससे कि लम्बे और मोटे होते है और ऐसी दवाओं का इस्तेमाल किया जा सकता है जिससे उसमें ज़्यादती हो, चूंकि इस बीमारी की तरफ आम तवज्जों है इसलिए थोड़ी सी तफसील जिक्र करता हूं, ताकि अच्छी तरह इत्मीनान हो जायें ,अगर वाकई ये शिकायत है तो जरुर उसका ईलाज करना चाहिये । बड़ी कामयाबी के साथ उसका ईलाज व हल मौजूद है। ज़रुरत पड़ने पर खिदमत ली जा सकती है– हकीम मुफ्ती मोहम्मद अशरफ अमरोही ।

और सुनों पढ़ों कि अल्लाह तआला ने जिस तरह जिस आदमी का बदन बनाया है वैसे ही उस के रग व पैठे व बदन के ऐज़ा बनायें है।

और उसी तरह आला तनासुल बनाया है कि अकसर आदमियों का आला तनासुल की लम्बाई 7-6 उंगल होनी चाहिये अगर औरत भी मामूली जिस्म की है या लम्बे कद की है तो ऐसे मर्द औरत के आपस में खूब अच्छी गुजरती है। और औलाद भी अच्छी पैदा होगी। और अगर मर्द तो है 7-6 उंगल की लम्बाई का और औरत भी खूब डील डौल की है तो आपस में हरगिज़ न बनेगी चाहे मर्द मुल्क का वज़ीरे आज़म ही क्यों न हो। और खूब औरत पर खर्च ही क्यों न करें।तब भी आपस में जोड़ न खाकर ही रहेगी और औलाद से भी महरुमी हो सकती है तो ऐसी औरत के शौहर को जरुर आला तनासुल के बढ़ाने का ईलाज करना चाहिये।जब मर्द ताकत दूर हो ऐसी ही औरत ताक़तवर और जस्से की हो तो उनका आपस में खूब अच्छी तरह गुजरान गुज़रेगा और ऐश से रहेंगे,और एक बात और याद रखें, जिस अजू का जो काम है उसको वही काम करने से

ताकत व कुव्वत मिलती है और छोड देने से लागरी व कमजोरी पैदा होती है। इसका मतलब खूब जाहिर है ये सबक है सबक समझने वालों के लिये।

एक समझने की बात मसले की साथ

जैसा कि हमने पीछे और पहले जिक्र किया है मनीअ के अलामतों को अब बताना ये है कि मनीअ के निकलने से गुस्ल फर्ज़ होता है ख्वाह मनीअ सोतें में ही निकले या जागते में, ख्वाह मनीअ खुद निकले या किसी वजह से थोड़ी ज्यादा, तमाम हालतों में गुस्ल करना फर्ज हो जाता है, चाहे वह मर्द हो या औरत।

इंसान के उस आला तनासुल से मनीअ के अलावा दो क़िस्म के पानी और निकलते है। वदी, यह भी एक किस्म का सफेद पानी होता है। अण्डे के सफेदी के शक्ल पर जो पैशाब के आगे या पीछे मिल जाता है। उससे गुस्ल फर्ज नही होता। मजी यह भी एक किस्म का पतला पानी होता है। जो मुबाशरत के ख्याल आने या औरत के करीब बैठकर या मुबाशरत का जिक्र होते वक्त आला तनासुल के मुंह पर निकल आता है। उस मजी के निकलने से भी गुस्ल फर्ज नही होता । बाकी तफसील मनीअ, वदी, मजी, की हकीम साहियान से मालूम करें, और उनके अहकाम उलेमा इकराम से मालूम करें।

ख़सियों से मुताअल्लिक़ कुछ इल्म

खसियों का तआरुफ हम अपनी किताब "पौशीदा राज़" में बयान कर चुके है , मुख्तसर साज कर उस किताब में भी करते है, ताकि मालूमात में इजाफा होकर उसकी हकीकत अच्छी तरह समझ में आ जायें, खिस्से जिनको फौते भी कहते है और बेजे भी बोलते है।

ये खिस्से हर हैवान व इंसान के होते है और ये माल गोदाम की हैसियत से होते है। उनका गोश्त सफेद होता है, उन दो थैलों के अन्दर बहुत सी रगें,औा पीछे झिल्ली से लिपटे हुए है तमाम बदन के एजाओं में सबसे ज्यादा नाजुक होते है। ज़रा सी चोट ये बर्दाश्त नही कर सकते, उनका गोश्त भी सफेद होता है। उस वजह से मनीअ भी यहा सफेद हो जाती है। जिस तरह औरत की छातियों में छातियों के असर से दूध सफेद होता है मनीअ खिस्सों में सफेद होकर जमा हो जाती है और मुबाशरत के वक्त निकलती है।

खिस्सों के बाल ज्यादा होना, मनीअ का जलन से निकलना मनीअ का रंग पीला होना, बड़े बड़े खिस्से का ठण्डा रहना और लटकते हुए होना कुव्वत मर्दानगी कम होने की अलामतें है।

अमसाक (रुकावट) पैदा करना

अमसाक के मुताअल्लिक लम्बा मज़मूनहम अपनी पहली किताब "पौशीदा राज़" में तहरीर कर चुके है, लेकिन चूंकि ये किताब अपनी नौइयत की एक नई किताब है और उसका अन्दाज़ ही निराला है और ये फजल रब्बे तआला है इसलिए हम इस किताब को भी इमसाक के मज़मून से महरुम नही करेंगे। आमतौर पर अमसाक तीन मिनट से सात मिनट तक पाया जाता है। हरकत के साथ सात मिनट से ज्यादा की रिर्पोट खबर अब तक लोगों से नही मिली।अगर चे इससे ज़्यादा भी हो सकता है। अल्लाह तआला ने शहूत की ताकत औरतों पर सरअत की वजह से मर्दो को तरजीह दी। लेकिन मर्दों की सरअत अनाज़िल का सबब बावजूद ज्यादा कवी होने के ये है कि सरअत मनीअ की कसरत की वजह से है। ये निसबत औरतों और मर्दो की मनीअ का नजूल कमर से होता है। मुसाफत करीब होने की वजह से जल्दी हरकत में आकर जल्दी मनीअ निकल जाती

है। मर्द का देर तक रुकाव नही होता। मनीअ क़रीब मक़ाम के होने की वजह से और ये बात ज़रूरी है कि जितनी शहूत व लज़्ज़त ज़्यादा होगी उसी क़द्र अनाजिल भी जल्दी होगा। और मिजाज की गर्मी भी अनाज़िल के जल्दी होने का सबब है कि मर्दो का मिजाज गर्म होता है और औरतों की मनीअ छातियों से निकल आकर आती है और ये मक़ाम दूर है। इस दूरी की वजह से देर से उनको मुबाशरत की ख्वाहिश होती है और औरतों में मनीअ भी कम पैदा होती है इसी वजह से देर से उनका अनाजिल होता है औरतों के मिजाज़ में सर्दी भी है। इसी वजह से देर में फारिग होती है। मिजाज़ में सर्दी होने की वजह से और मर्द का मिज़ाज़ गर्म होने की वजह से मर्द जल्दी फारिग होता है और उभार जोश भी जल्दी हो जाता है।

ये बात भी याद रखें कि औरत को मुबाशरत से एक ही मर्तबा अनाज़िल होता है और मर्द को एक ही रात में मुबाशरत से हर मर्तबा की मुबाशरत से अनाज़िल होता है, न कि औरत को कि हर मर्तबा की मुबाशरत से अनाजिल नही होता है और इसी वजह से औरत को मुबाशरत से कमज़ोरी कम होती है। और मर्दों की मनीअ ज्यादा निकलने और हर मर्तबा की मुबाशरत में अनाजिल होने की वजह से कमज़ोरी ज़्यादा होती है। बस यहीं से समझ लेना चाहिये । मर्द औरत के अनाज़िल का फर्क और ख्याल रखना चाहिये कि मर्द के अनाज़िल के साथ औरत को अनाज़िल हो जाने का।

जब तक औरत मर्द की मुश्ताक़ न हो और शौहर औरत का मुश्ताक़ न हो उस हालत की मुबाशरत करना अहतलाम होने से भी बुरा है। उसी वजह से औरत को पहले मिसास करे ताकि शहूत से मस्तहो जाये और बे नशे की मुमसाक़ अशया को इस्तेमाल किया जाये या आला तनासुल पर लगाने वाली दवाओं को इस्तेमाल करके

मुबाशरत करनी चाहिये ताकि मर्द औरत दोनों का एक साथ अनाज़िल हू और शौहरों को बीवियों की नजरों में हकीर व ज़लील होकर शर्मिन्दा न होना पड़ें, इसलिए ऐसी दवाओं की जरुरत जरुरी है जिससे कुछ इमसाक पैदा हो और उन अदावयात में अफयोन नशे लाने वाली चीज़ें न हों।

अमसाक कैसे पैदा होता है?

अमसाक यानि रुकावट मनीअ के गाढ़ा हो और ठण्डा होने पर होता है या मनीअ के खुश्क होने पर, अमसाक की मिसाल ऐसी है जैसे सर्दी के मौसम में पानी जम जाता है और खुश्क की मिसाल ऐसी है जैसे पतीली के नीचे ज़्यादा आग जलाने से शौरबा खुश्क हो जाता है। अगर किसी को इमसाक होता है तो उसको मजीद इमसाक की हिरस नही क़रनी चाहिये और जिनको इमसाक न होता हो उनको इमसाक की दवाऐं इस्तेमाल करनी चाहिये, इमसाक की कुछ खास व मखसूस दवाएं और अमसाक की खास मख़सूस तदबीरें हमारे पास है और उन तदबीरों में बड़ी ज़बरदस्त कामयाबी व कामरानी हे कि उन्हें न लगाने की जरुरत और न कुछ खाने की जरुरत और खूब अमसाक होता है। लेकिन उन दवाईयों के साथ, साथ तदबीरो को इख्तयार करने से पेट भर कर अमसाक किया जाता है। फायदा उठाने वाले जो कि यक़ीनी तौर पर शदीद जरुरत मंद है वह मुझ से मिलें या लिखें हमारा पता है–

Md. Ashraf

Off No. E Block B.D.A. Layout H.M. Road, Cross,Church Street.

Lingarajpuram, Banglore-560-084 Karnataka, India Phone. 080-5489093

औरत की ख्वाहिश कम करने के लिये

बाज औरतो की ख्वाहिश बहुत ज्यादा होती है कि शौहर के मिलने से उनकी ख्वाहिश की आग ठण्डी नही पडती और जोश की प्यास नही बुझती है, गैरों की तरफ भी उठती नजर आवें या उठती हो तो उनके लिये भी ऐसी दवाओं का इस्तेमाल करना चाहिये जैसे मर्द हजरात अमसाक पैदा करने की तरफ तवज्जो देते है।

और एक बात ये भी है कि मुवाशरत जो रगबत से की जाती है वह भूख के साथ हो, यानि मुवाशरत की भूख से । तो ऐसी मुवाशरत से जो औलाद पैदा होती है वह खूबसुरत और सीरत में तारीफ के लायक और अक्लमंद होती है। इसलिए शहूत के हिजान और लज्जत का हासिल करने और रगबत की ज्यादती की वजह से असल जोहर यानि मनीअ का निकल कर औरत की रहम मे जगह पकड लेती है।

और अगर नुतफा वगैर रगबत व ख्वाहिश के ठहरेगा तो औलाद बदसूरत और कमजोर दिमाग की और नालायक पैदा होती है और ऐसी हालत में मजकूरा में मनीअ भी बहुत खराब निकल जाती है इसलिए ऐसी दवाओं को इस्तेमाल न किया जाये अगर आला तनासुल छोटा भी हो तो उनके जरिये से औरत की रहम तक मनीअ पहुंच जाये और हम्ल ठहर जायें और लज्जत भी ज्यादा हो और औरत की ख्वाहिश जो ज्यादा है वह भी कम हो, किसी तजुर्बा कार हकीम से मशवरा व सलाह के लिये रजूअ होकर अपनी शिकायत दूर कर सकते है।

कुव्वत मर्दानगी को नुकसानदह चीजें

दो चीजें जो मर्दानगी को नुकसान देती है उन से बचना चाहिये

हम मुख्तसर करके जरा ज़रा उन चीजों की तरह रोशनी डालते है जैसे कि पेट की खराबी के वह हर गिज खराब न हो और हमेशा बहुत ज्यादा ठण्डा पानी न पिया करें और जो चीजें मनीअ को सुखाती और खुश्क करती है उनसे बचें, जैसे मसूर, देसी अजवेन, ज्यादा सफेद व कालाहर किस्म का खटटा, आमचूर, सिरका, लीमू, अचार, खटाई, यानि रखा हुआ सुर्ख मिर्च वगैरहा और ज्यादा नमक व नमकीन, खाने से भी बचें, अगर ज़्यादा दिल चाहे, तो काली मिर्च का इस्तेमाल करें, और सालनों में भी दही इस्तेमाल में लायें, इस्तबाल, गुलाब, के फूल, काफूर, और नशे पैदा करने वाली अशयासे परहेज करें, भंग, चरस, अफीन, ये नशा पैदा करने वाली चीजें गुर्दा मसाने वगैरह में रतूबत को जमा देती है। और होश व हवास में सुस्ताहट पैदा करके आला तनासुल के अन्दर वाहर वाले पट्ठों व रगों मे सुन व सर्दी पैदा कर देती है। जिससे रगों में सुस्ती व फालिज की बीमारी पैदा होती है और जब तक मुबाशरत करने की ताकत पैदा न हो जाये तो फअल मुबाशरत से रुका रहना चाहिये।

शराब नोशी मुज़रबाह है

शराब के लफ्ज़ी मायने है शर– आब : शर मायने फितना फसाद के मायने है पानी, शराब के मायने हुए फितने व फसाद का पानी– शराब के मुताअल्लिक कुछ लोगों का फासिद ख्याल है कि उससे कुव्वतबाह यानि मर्दानगी में इजाफा होता है, तो शराब हकीकतन कुव्वत मर्दानगी के लिये वक्ती तौर पर मुफीद मालूम होती है और जब नशा उतर जाता है तो अपने बुरे असरात से जकड़ती है। शरई एतबार से शराब हराम है इसका थोड़ा भी और ज्यादा भी हराम है बल्कि दवा के तौर पर जानवरों के ज़ख्म पर लगाना भी मना है। हदीस शरीफ में बड़ी सख्त वईदें आई हैं मरवी है कि शराबी का चेहरा कब्र में किब्ले से फेर दिया जाता है और शराब तमाम

बुराईयों की अम्मा है। एक जगह है कि शराब तमाम बुराई की चाबी (केली) है और शराबी को सलाम करना या उससे मुसाफा करना या गले मिलना गुनाह है उसके नामा ए आमाल से चालीस साल की इबादत मिट जाती है जिसने शराबी की मदद की उसने इस्लाम को ढाने में मदद की और जिसने शराबी को कर्ज दिया गोया उसने मुसलमानों के कत्ल पर मदद की और जो शराबी का दोस्त बना कयामत के दिन अंधा उठाया जायेगा और शराबी का निकाह ना करों और बीमार हो जाये तो बीमार पुरसी न करो. अल्लाह की कसम शराबी तौर एत में ज़बूर में, इंजील में. और कुर्आनें करीम में मलऊन व मरदूद है। और शराब पीने पर चालीस रोज तक नमाज कबूल नही होती। जिसने अपनी लड़की का शराबी से निकाह किया तो उसने जिना करने के लिये बेटी को दिया। शराबी नशे की हालत मे मर कर शैतान की दुल्हन बनता है। ये तमाम रिवायतें किताबों में मौजदू है "वल्लाहू आलमू बिस्सवाबी " शराब को खाने ए खराब भी बोला जाता है और ये बिल्कुल सही बात है इसलिए कि उससे जान भी बर्बाद, माल भी बर्बाद होता है। शराब के बुरे असरात से दिमाग और पट्ठों पर बहुत असर होता है और शराब पीने वाले शख्स का दिल भी जल्द बिगड़ जाता है। दिल की कमज़ोरी इन्तहाई हो जाती है और हार्ट एटेक की बीमारी होकर अचानक मौत की नींद में सो जाता है। शराब पीने से आज़ाए रईसा भी कमज़ोर हो जाते है और जिगर पर वरम हो जाता है और शराबियों की औलाद कमजोर, ज़ईफ, व नहीफ, और दिलों दिमाग की बीमारी वाली पैदा होती है। शराब के नशे के वक्त ताकत व फरहत व सुरुर मालूम होता है और नशा उतरने के बाद मग़मूम व रंजीदा दिल होता है शराब पीने के बाद इन्तहाई अच्छी गर्मी मालूम होती है नशा उतरने के बाद इन्तहाई सर्दी लगती है इसलिऐ शराबी शराब के मजे की खातिर बार बार

मना करने व रोकने पर भी नही रुकता है। शराबी को कितना ही कुर्आन व हदीस बताओ और अक़्ली व तिब्बी नुकसान समझाओ पर वो उस मलऊन व मरदूद मज़े की खातिर कुर्आन व हदीस व बुजुर्गो की नसीहतें व हिदायतें पसे पुश्त डाल देता है क्योंकि जब ये शराब एक मर्तबा मुंह को लग गई तो फिर इससे बचना मुश्किल हो जाता है। शराब की बुराई दुनिया के अक्लमंदों ने मुख्तलिफ तरीकें से बताई व समझाई है लेकिन उसके अलावा मैं कहता हूं कि इंसान शराब के नशे में इंसान नही रहता। बल्कि जानवर हैवान बन जाता हैं अब ये सवाल ये हैं कि खुद जानवर भी शराब के नशे से जानवर रहता है कि नही ? तो तिब्बी हिकमत व साईस से मालूम हुआ कि शराब जानवर व इंसान के शऊर व समझ अहसास को बड़ी बुरी तरह से गिरा देती है। नई मालूमात हैं कि बिल्लीयों पर इसका तजुर्बा किया गया तो बिल्लीयों की अक्ल व शऊर खत्म हो गई। गोया कि बिल्लीयों के सरों मे दिमाग ही नही था फिर कुत्तों पर इसका तजुर्बा किया गया तो कुत्तोंओं पर बिल्लीयों से ज़्यादा बुरा नतीजा सामने आया कि शराब का बुरा नतीजा जानवरों व कुत्तों व बिल्लीयों के बच्चों पर भी और उनकी नस्ल पर भी पड़ा है। शराब का नुकसान सिर्फ यही नही कि वह बदन का जुरव ही नही बनती बल्कि शराब का नुकसान यह भी है कि वो दूसरी गिज़ाओं को भी जुज़्ब बनने देती है तो ये अर्ज़ कर रहा था कि बहुत से लोग शराब पीनें को कुव्वत मर्दानगी का ज़रिया समझ कर इख्तयार कर लेते है फिर उनकी ये हालत हो जाती है कि शराब की पीये बग़ैर मुबाशरत कर ही नही सकते और उसके असरात से औरतों को भी आदी बना देते हैं। बस दीनी व दुनियावी व अक़्ली व तिब्बी ऐतबार से शराब को हाथ ही नही लगाना चाहिये बल्कि शराबीयों के क़रीब ही नही बैठना चाहिये। अल्लाह तआला ने उसकों "रिजसुम मिन अली शैयतानी"

फरमाया है। फरमाया है कि ये नापाक है और दीन व दुनिया दोनों को नुकसान पहुंचाती है और शराब लोगो में बे इज्जती व जिल्लत ख्वारी का सबब है। आप देखते है कि शराबी शराब के नशे में उसकी गंदगी व पलीदगी में पड़ा रहता है जहा कुत्ता भी नही बैठता गोया कि कुत्ता भी शराबी की इस हरकत पर लानत व मलामत भेजता है और शराब हर ऐतबार से नुकसान देह है। शराब पीते ही फौरन पट्ठों को नूकसान देती है हाथ पांव में लगजिश पैदा करती है शराबी नशे के वक्त अपने इख्तयार में नही रहता इधर उधर लुढकता है दिमाग को इस कद्र नुकसान देती है होश हवास खत्म हो जाता हैं कि यह कुत्तों को भी बाप कह देता है शराब बदन में रेशा पैदा करती है पट्ठे खिचने लगते हैं, जिगर में फुतुर पैदा करती है, पेट को खराब करती है, गुर्दो को कमजोर बना देती है फेफड़ों की उम्र कम कर देती है, शराब खास कर दिल को नुकसान व तबाह करती है। क्योंकि शराब के अजज़ाह को दिल बहुत जल्दी जज्ब व कबूल करता है। दिल की बीमारी में शराबी गिरफतार होकर ज़िल्लत की मौत मर जाता है। "खसीरददुनिया व आलखिरा" हो जाता है इसलिए वो भाई, जो इस किताब का मजमून पढ रहे है अपने दूसरे शराब के आदी मरीजों को सुनाए व समझाए और उसकी तबाह कारियां व नुकसानात से आगाह करें, बेहतर ये है कि मज़मून आम लोगों को भी बता दें और सुना दें, कि इस वक्त शराब की गंदी हवा से बचें, और नफरत करें, कि जिस तरह सुअर, खिंजीर को बुरा जाने उसको भी बुरा जानें, फकत हकीम मुफती मोहम्मद अशरफ, "वमा अलाइना इल्ल बलाग" बात कह देना मेरा काम, पहुंचाना आपका काम समझना उनका काम, फकत दुआ व सलाम।

नामर्दी की अलामात व असबाब

नामर्दी जिसको अरबी में उनेन कहते है। उसके असबाब व

अलामात पर गौर करते हुए हकीम से रुजूअ होना चाहिये क्योंकि बाज उनेन (नामर्द) ऐसे भी होते है कि उनका ईलाज हो सकता है जिसका मुख्तसर मैं ज़िक्र करता हूं कि अगर उनेन के पट्ठों में बलग़मी फुजला ठहर जाये या ठण्डे पानी में बहुत देर तक रुकने या बर्फ पर उठने बैठने का इत्तेफाक होता हो इस ज्यादती की सर्दी की वजह से नीचे के हिस्से मे गर्मी बहुत कम पैदा हो. और आला तनासुल सुस्त रहें. कि इससे मुबाशरत अच्छी तरह न हो सके उनेन के अलामात ये है कि मनीअ बहुत कम पैदा हो. और वह भी बहुत पतली हो. और बगैर हिस व इन्तशार के निकल जाये कि आला तनासुल में अहसास व हरकत न हो कि जो औरत से मुबाशरत कर सके बल्कि वो आला तनासुल व ज़बरो ज़द दुबला पतला होता रहे. और जब ठंडा पानी लगे तो न सिकुडे इसलिए कि वह तो पहले ही से सुकड़ा हुआ है। और न कम उठे बल्कि वह पहले ही तरह एक हालत पर रहें. अगर ऐसे उनेन शख्स को इस बीमारी की ज़्यादती हो गई और जमाना भी ज़्यादा गुजर गया है और इन्तशार नाम की कोई चीज नही है तो ऐसे उनेन ला ईलाज है और अगर मज़कूरा अलामतों में से कमज़ोफी हो और ठण्डा पानी डालने व लगने से फर्क पैदा होता हो तो ईलाज हो सकता है काबिल तजुर्बाकार हकीमों से रुजुअ फरमाकर ईलाज कराना चाहिये और इसके बताए हुए उसूलों व हिदायतों को पाबन्दी से इख्तयार करना चाहिये। ताकि नामुरादी मुरादी से बदल जायें. और नाउम्मीदी उम्मीदी से तबदील हो जायें। मगर उनेन सानी कमज़ौफी का ईलाज होने में ज्यादा अर्सा लगता है जिसके लिये ईलाज के दरम्यान सब्र से काम लें।

ये ज़रुरी हिदायत है

मरीज़ आदमी को ज़रुरी है कि वो अपनी बीमारी को हकीम से छिपाये नही साफ–साफ अपना पूरा हाल बयान कर दें. शर्म करने से

आला तनासुल की खराबी कम नही होती। कुछ बीमारियों को नब्ज व वकार वीरे के जरिये जान लिया जाता है लेकिन आला तनासुल का हाल नब्ज व कार वीरे के जरिये मालूम नही होता, बीमार शख्स के कहने से ही मालूम होता है और हकीम साहिबान भी पूरी दिलचस्पी व मोहब्बत से ईलाज करेंगें, इसलिए कि उस ईलाज से फायदा होने पर औलाद पैदा होती है और अल्लाह तआला की मखलूक बढ़ती है और आला तनासुल की तंदरुस्ती का फायदा सबको मालूम है कि इसके ज़रिये से मनीअ रहम में जाती है जिससे हम्ल ठहरता है यगैरह वगैरह।

एहतलाम का मतलब

एहतलाम कहते है सोते में मनीअ के निकल जाने को जैसा हमने "पोशीदा राज़" किताब में कुछ तफसील से लिखा है। मजीद मालूमात के लिये भी यहा पर भी अर्ज़ है ये एहतलाम आम तौर पर उन लोंगों को दरपेश होता है जो शहवत की लज्ज़त के मायल व ख्याल में रहते है और अपनी खिदमत की वास्ते शक्ल व सूरत या किसी के दिल में ख्याल के खज़ाने के पेश करने की वजह से होता है और ये एहतलाम नजरों की बुराई के असरात के सबब ज़्यादा तर वकूअ पजीर होता है और ये एहतलाम दुनिया के गिरफतारों को लाहिक ज़्यादा हो ता है तमाम तारीफें व खूबियां व हम्द सना सब अल्लाह तआला ही के लायक है। बन्दा हकीर को कई सालों तक इससे बिल्कुल हिफाजत में रखा, हिफाज़त ज़्यादा लम्बी हो ज़ाने की वजह से भी मैं घबरा गया अपने मुशफिक व मुरबी उस्ताजों से इसका ज़िक्र किया उन्होंने फरमाया कि घबराने की कोई बात नही है अगर इंसान को दस साल भी एहतलाम न हो तो कोई फर्क नही पड़ता उसके बाद मैं उसकी मालूमात में आगे बढ़ा। चंद अय्याम के बाद हज़रत शेख शहाबुद्दीन सहरवर्दी रह0 अ0 का फरमूदा नज़रों से गुज़रा कि अकसर एहतलाम का होना इंसान की नजरों व ख्यालों का

आज़ार होता है। फिर चंद अय्याम सय्यदना शेख अब्दुल कादिर जेलानी रह० अ० का इरशाद मुताअला से गुज़रा कि एहतलाम नज़रों की खराबी से भी होता है और कुर्आने करीम की तफसील में मैंने पढ़ा है जिसको अल्लामा जलालुद्दीन स्यूती रह० अ० ने बयान फरमाया है कि रसूलुल्लाह स० अ० व० को कभी भी पूरी ज़िन्दगी एहतलाम नही हुआ है और हज़रत मौलाना शेख ज़करिया अ० रह० कि सवानेह उम्री में लिखा है कि आपकी पूरी ज़िन्दगी में सिर्फ एक मर्तबा एहतलाम हुआ है वो भी ऊंट की सवारी करते हुए। हज़रत अंबिया व रुसलेह अलै० व० से इस तरह से नाकिस हरकतों का पाया जाना मुमकिन नही है। चूंकि एहतलाम शैतानी असरात से भी होता है और अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया "इन इबादी लईस लका अलैहिमुस्सुलतानी" यानि मेरे नेक बंदों पर शैतान का असर गालिब नही होता। इसलिए मैं कहता हूं कि एहतलाम का होना जरुरी नही है और अगर किसी को महीने में दो तीन मर्तबा एहतलाम हो जाता है तो उसको ईलाज कराने की ज़रुरत नही है और अगर इससे ज़्यादा हो तो तो हकीम व तबीब से रुजुअ होना चाहिये। अगर किसी को मुसलसल एहतलाम होता रहे तो ज़रुर कमज़ोरी पैदा होती है यहां तक कि बाज़ लोगों को एक ही रात में दो तीन मर्तबा एहतलाम हो जाता है तो ऐसे लोगों पर बेहद थकान और खस्ता हाली, बदहाली, और उदासी छा जाती हैं। तबियत निहायत परेशान होती है। ऐसे लोगों की मनीअ पतली पड़ जाती है। फिर ऐसे लोगों को एहतलाम होने का पता भी नही चलता चूंकि मनीअ पानी की तरह निकल जाती है। या पेशाब पखाने के बाद. या किसी औरत से बातें करने से या किसी शहवत भरे मज़मून को देखने या पढ़ने से और जब ये मनीअ पतली हो जाती है तो औलाद के पैदा होने का सिलसिला कमज़ोर पड़कर खत्म हो जाता है।

जिरयान व एहतलाम की ज़्यादती व कसरत मुबाशरत के नुक़सान

जिरयान व एहतलाम की ज्यादती व कसरत व मुबाशरत के नुकसान शुरु इब्तदाई मरहलों में तो हल्की सी कमजोरी होती है। जिस तरफ तवज्जो भी नही होती कि सुबह को सर में दर्द, सर में भारी पन, खास तौर पर जबकि मनीअ निकल जाये, और अगर एक ही रात में कई दफा एहतलाम हो जाये तो परेशानी और भूल की बीमारी पैदा होने लगती है। आखो तले अधेरा, रोशनी मे कमी आ जाती है, किसी बीमारी से इसान इतना अधा नही होता जितना इस मनीअ के निकलने से होता है। एहतलाम की ज्यादती से आंखों से कम नज़र आता है दिल कमज़ोर हो जाता है, रगो व पट्ठों में लरजा व रेशा पैदा हो जाता है खाना हजम नही होता, फोतें (खुसिये) लटक जाते है और आजा सुस्त हो जाते है। कानों से कुव्वत समाअत (सुनने की ताकत) कम हो जाती है बाज मर्तबा कानों में सुन सनाहट की आवाजें की आनी लगती है बाज लोगों को नींद नही आती मगर ऐसे लोग कम होते है अकसर ऐसे एहतलाम के मरीजों को नींद ज्यादा आती है। और वह जब सोते है तो खौफनाक भयानक ख्वाब दिखाई देते है। ऐसे मरीज़ लोगों को सोने से आराम नही मिलता बल्कि उलझनी दिमाग़ बनता है। चेहरे पर खुश्की आती है गोरे रंग के लोगों का चेहरा पीला हो जाता है और नीचे उतरने चढ़ने से हाफनें जल्दी हो जाती है और थोड़ा काम करने से बदन थक जाता है। जल्दी जल्दी पैशाब आने लगता है कुछ लोगों के पैशाब में बू भी पैदा हो जाती है। बेहतरीन से बेहतरीन खाना खाने से वो बदन को नही लगता और बदन बजाये फूलने के घूलने और सूखने लगता है ये एहतलाम की बीमारी बड़ी जानलेवा है इन अलामतो को जो हमने जिक्र की है समझ कर ईलाज की तरफ फौरन तवज्जो देनी चाहिये।

एहतलाम के मुख़्तलिफ असबाब है

जिनमें ये मर्ज लायक होता है उसके मुख़्तलिफ असबाब है। मसलन जल्क, ज्यादती मुबाशरत, अगलाम बाजी, मनीअ का ज्यादा होना, गंदे मुहब्बत भरे ख्यालात का होना, चित लेटना (कमर के बल सीधे)पेट की खराबी ज्यादा खाना कि वह हज़म न हो, या पेट में कीडे, या आला तनासुल की खारिश, खुजली का होना या आला तनासुल की खाल का लम्बा होना, या बुरी सोहबत मोहब्बत व इश्क या नाविलों व मुनाज़रो का देखना, मसाने की कमजोरी वगैरह वगैरह।

एहतलाम की बीमारी का ईलाज

एहतलाम के नुकसानात मुख़्तसरन ऊपर आपने पढ़े अब इससे मुताअल्लिक कुछ हिदायात अर्ज करता हूं। एहतलाम का ईलाज में सबसे पहले ये ज़रुरी है कि ख्याल को पाक साफ रखा जाये और तबियत को काबू में रखा जाये और अच्छे लोगों की सोहबत इख्तयार करे फिर गिज़ा और पेट को सही रखना ज़रुरी है एहतलाम के मरीज़ ज्यादा मसाले व गर्म देर हज़्म जैसे गोश्त कबाब, अण्डे, ज़्यादा चाय काफी , बेंगन, मसूर की दाल वगैरह वगैरह । गिज़ा हल्की सादी खास तौर पर हरी सब्ज़ी लें रात का खाना ज़रा कम खायें और सोन से दो घण्टे पहले खा लेना चाहिये, और सोते वक़्त पानी चाय वगैरह ज्यादा न पीयें, और सोने से पहले इस्तनजा से फारिग़ होकर सोना चाहिये, वरना तो पैशाब मसाने मे जमा होकर एहतलाम होने का ज़रिया होता है।कब्ज़ हरगिज़ न होने दे, क्योंकि अकसर एहतलान के मरीज़ कब्ज़ के भी मरीज़ होते है। और उसी की वजह से एहतलाम का भी ज़रिया होते है नर्म गर्म बिस्तर पर

सोने से एहतलाम का बाअस होता है। इसीलिए एहतलाम के मरीज के लिये बिस्तर ज्यादा गुदगदे न हो, कुछ सख्त हो और कमरा हवादार हो, ज्यादा गर्म न हो, अगर एहतलाम के मरीज को चित लेटने की आदत होतो कमर पर कोई गिरहदार चीज बांधकर सोना चाहिये क्योंकि चित लेटने से भी एहतलाम होता है। आखिर रात में जब पैशाब की हाजत हो तो फौरन उठकर कर लेना चाहिये, अगर गर्मी का मौसम हो और मिजाज़ भी गर्म हो, और ठण्डा पानी नुकसान न करता हो तो रोज़ाना ठण्डे पानी से गुस्ल करना फायदे मद होता है एहतलाम को रोकने वाली दवाएं ज़्यादा अरसे तक नही खानी चाहिये, उसकी ज़्यादती से नामर्दी पैदा होती है। एहतलाम के मरीज आला तनासुल पर कोई तिला या कोई मुहर्रिक लेप न लगायें, वरना एहतलाम की ज़्यादती हो जायेगी, और एहतलाम के मरीज का ईलाज करने से पहले अपने मेदे व पेट का हाल ज़रुरी बताना चाहिये, और ईलाज के दरम्यान कोई दवा गिज़ा इस्तेमाल न करे जो शहवत को भड़का दे और एहतलाम के मरीज़ को रात की गिज़ा में कच्ची प्याज इस्तमाल न करना चाहिये, वरना तो एहतलाम उसी रात मे हो जायेगा, तम्बाकु, बीड़ी, सिगरेट, भी नही पीनी चाहिये, अगर आदत से मजबूर हो तो बहुत कम करके बिल्कुल छोड़ देनी चाहिये, इसलिए कि तम्बाकू को जोहर हर दिल व दिमाग़ और मनीअ के लिए इन्तहाई नुक़सान दह है, बल्कि ज़हर है। तम्बाकू उसके इस्तेमाल करने वालों के एज़ाए रईसा पर बुरा असर डालता है। तम्बाकू वाकई एक ज़हर है अगर उसकी कुछ मिक़दार ज्यादा इस्तेमाल कर ली जाये तो दर्द सर, सुस्ती, कै, बदख्वाबी, आंखों में कमज़ोरी, सुनने की क़मज़ोरी, हाथों व हथेलियों में, जलन व सांस लेने में खुश्की, हाज़मा, दिमाग़, में कमज़ोरी, और भूल भी लायक़ है, हलक़ में दर्द, और बहरापन, भी पैदा होता है बल्कि उसकी कसरत

से इस्तेमाल किया जाये तो फेफड़े, भी खराब हो जाते है .खून बिल्कुल पतला हो जाता है, बदन में बीमारियों से रोकने वाली ताकत मदाफत मिट जाती है, दिल की धड़कने तेज़ हो जाती है, दिल फैल जाता है, पट्ठे कमजोर हो जाते है, ये तमाम नुकसानात तम्बाकू में पाये जाते है। यहां तक कि तम्बाकू में पाये जाते है, यहां तक कि तम्बाकू इस्तेमाल करने वालों की औलाद भी अकसर कमजोर होती है मेरा खूब तजुर्बा यह है।

मिसवाक़ करने से कुव्वत बाह ज़्यादा होती है

कुव्वत बाह में मर्दानगी ताकत ज़्यादा करने वाली चीज़ों की तफसील हमारे "पोशीदा राज़"किताब में ज़िक्र किया है वहां देख लें और कुव्वत बाह बढाने के हजारों नुस्खें है जो कि इन्तहाई मुजर्रिब आज़मूद है, हम उनको बयान करने से कासिर व मजबूर है, जिनको बड़ी मेहनतों व मुश्किलों से हासिल किया कया है। ज़रुरत मंद हज़रात ज़रुरत पर हमसे रुजूअ हों, हम ज़रुरत मंदों के साथ फय्याज़ी इख्तयार करेंगे, और जरुरत मंदों को फायदा ही होगा। हकीम मुफती मोहम्मद अशरफ अमरोही

अब इस वक़्त एक रुहानी ईमानी, जिस्मानी, फैज़ाई, नुस्खें, आपके सामने पेश करता हूं, रसूल अकरम स0 अ0 व0 की सुन्नत समझते हुए, इख्तयार करें, वह है मिस्वाक मिस्वाक करने से जिस तरह दीन व दुनिया के बे शुमार फायदे है इसी तरह मिस्वाक करने का फायदा भी है कि उससे कुव्वत बाह ज्यादा होती है, मिस्वाक से ख्वाहिश भी पैदा होती है, बाज़ मर्तबा मर्द यानि शौहर के मुंह या बीवी के मुंह की बदबू से फअल मुबाशरत में जज़्बात ठण्डे पड़ जाते है और इस बदबू को मिटाने का सबसे बेहतरीन कामयाब ईलाज

मिसवाक करना है। मुख्तलिफ हदीसों से मालूम होता है कि मिसवाक मुह में खूशबू पैदा करती है. जबान मे सफाई पैदा करती है. दिमाग को तेज करती है. मिस्वाक में बहुत सी बीमारियों में शिफा है. मिस्वाक करने वाले से फरिश्ते मुसाफा करते है. जिना से हिफाजत का जरिया है; दांतों को मजबूत बनाती है. और चमकाती है. मसूढ़ों को ताकत देती है बलगम निकालती है. आंखो की रोशनी तेज करती है। भूख बढ़ाती है. कब्ज़ को खत्म करती है मिस्वाक की पाबन्दी से रोज़ी. अमान. हो जाती है. बुढ़ापे को देर में लाती है. कमर को मज़बूत करती है. वगैरहा वगैरहा।

ज़िना करने से मुताअल्लिक वईदतें

ज़िना से मुताअल्लिक खास अहम कलाम में पहले अर्ज़ कर चुका हूं. मगर उसकी ज़्यादती वहां के पेशे नज़र मुस्तकिल अलग से कुछ कहना ज़रुरी समझता हूं. क्योंकि जो चीज़ आम हो जाती है उसकी बुराई ज़हनो से निकल जाती है इसलिए ज़िना आम वबा हो चुकी है और अब लोग ज़िना करने को बतौर फख्र के ज़िक्र भी करते है। जबकि आसमानों, व ज़मीनों के पैदा करने वाला अल्लाह तआला ने फरमाया है " वला तक़रबू अल ज़िना अनहू कान फाहशत वसा सीला" और ज़िना के करीब भी ना जाओ. क्योंकि वह बड़ी बेहयाई की बात है ।

रसूल अकरम स0 अ0 व0 ने इरशाद फरमाया कि तौरेत में लिखा है कि ज़िना न करो. ज़िना करोगे तो तुम्हारी औरतें भी ज़िना करेंगी.

ज़िना बुनियाद को खराब करता है. ज़िना से बचने वाले शख्स को कयामत के दिन अर्श इलाही का साया नसीब होगा। अल्लाह तआला फरमाते है। ठहर जा सब्र कर तुझे भी आ जायेगा। फरमाया ज़िना करने वाला. ज़िना करते वक़्त मोमिन नही रहता. एक दफा इस

जिना से नबी इसराईल के सत्तर हजार आदमी अचानक वबा में फंस कर मर ग.ए।

मेरे भाईयो नफसानी ख्वाहिश चद रोज की है एक दिन उसको छोडना है. बुढापे में ये इंसान को खुद छोड देती है उस वक्त कितनी बहादुरी दिखाते हो, बहादुरी उस इसान की है. जो जवानी मे उन बुरी आदतों से बचे. बस अबदुआ है कि अल्लाह उस मलऊन व मरदूद फअल से हिफाजत में रखे और बतला लोगों को बचाये और रौजाना की आदत में मुब्तला लोगों को दुआ जरुरी पढनी चाहिये।

अब इस वक्त एक रुहानी ईमानी, जिस्मानी, फैज़ाई, नुस्खें, आपके सामने पेश करता हू, रसूल अकरम स0 अ0 व0 की सुन्नत समझते हुए, इख्तयार करे, वह है मिस्वाक मिस्वाक करने से जिस तरह दीन व दुनिया के बे शुमार फायदे है इसी तरह मिस्वाक करने का फायदा भी है कि उससे कुव्वत बाह ज्यादा होती है, मिस्वाक से ख्वाहिश भी पैदा होती है, बाज़ मर्तबा मर्द यानि शौहर के मुंह या बीवी के मुंह की बदबू से फअल मुबाशरत में जज़्बात ठण्डे पड जाते है और इस बदबू को मिटाने का सबसे बेहतरीन कामयाब ईलाज मिसवाक करना है। मुख्तलिफ हदीसों से मालूम होता है कि मिसवाक मुंह में खूशबू पैदा करती है, ज़बान में सफाई पैदा करती है, दिमाग को तेज़ करती है, मिस्वाक में बहुत सी बीमारियों में शिफा है, मिस्वाक करने वाले से फरिश्ते मुसाफा करते है, जिना से हिफाजत का ज़रिया है, दांतों को मज़बूत बनाती है.।

मरीज़ आदमी को ज़रुरी है कि वो अपनी बीमारी को हकीम से छिपाये नही साफ–साफ अपना पूरा हाल बयान कर दें, शर्म करने से आला तनासुल की खराबी कम नही होती। कुछ बीमारियों को नब्ज़ व वकार वीरे के ज़रिये जान लिया जाता है लेकिन आला तनासुल का हाल नब्ज़ व कार वीरे के ज़रिये मालूम नही होता, बीमार शख्स

के कहने से ही मालूम होता है और हकीम साहिबान भी पूरी दिलचस्पी व मोहब्बत से ईलाज करेंगें, इसलिए कि उस ईलाज से फायदा होने पर औलाद पैदा होती है और अल्लाह तआला की मखलूक बढ़ती है और आला तनासुल की तंदरुस्ती का फायदा सबको मालूम है कि इसके ज़रिये से मनीअ रहम में जाती है जिससे हम्ल ठहरता है वगै़रह वगै़रह।

मेरे भाईयों नफसानी ख्वाहिश चंद रोज़ की है, एक दिन उसको छोड़ना है।

"अल्लाहुम्मा इन्नी अऊजुबिका मिन शर समई वमिन शर बसरी वमिन शर लिसानी वमिन शर क़लबी वमिन शर मनी"

तर्जुमा— ऐ अल्लाह पनाह चाहता हूं मैं आपकी कानों की शर से आंखों की शर से, ज़बान के शर से, दिल के शर से, और मनीअ के शर से, ये दुआ हदीस शरीफ में आई है उस दुआ को तीन तीन मर्तबा नमाज़ के बाद पढ़नी चाहिये।

लवातत करने से मुताअल्लिक़ थोड़ी सी वईद

लवातत यानि लड़कों के साथ मिलकर अपनी ख्वाहिश पूरी करने वाला इंसान अगर तमाम दुनिया के पानियों से भी गुस्ल कर ले तो भी क़यामत के दिन नापाक उठेगा, बगै़र तौबा माफी नही है, तौबा ही इस गुनाह को धोती है जो शख्स किसी बच्चे को शहवत से प्यार करेगा तो अल्लाह तआला उसे हज़ार साल जहान्नुम में फेंक देगा। जब शैतान किसी शख्स को किसी लड़के पर चढ़ा हुआ देखता है तो शैतान भी अज़ाब के खौफ से वहां से भाग ज़ाता है और अरशे इलाही लरजने लगता है . शहवत की नज़र से लड़के का बोसा लेना

मसल अपनी मां के साथ जिना करने के बराबर है । यानि गुनाह है और मा से जिना करना नबियों के कत्ल करने के बराबर है। हजरत सुलैमान अल0 इस्लाम ने एक दिन शैतान से पूछा कि तेरी नजरो में कौन सा अम्ल अच्छा है? तो शैतान ने जवाब दिया, लवातत और कहा कि औरत का औरत से बुरा काम करना मुझे बहुत खुश करता है इसी आदत की वजह से अल्लाह तआला ने कौम लूत पर अज़ाब भेजा और उन को हलाक किया कि ज़मीन के नीचे के हिस्से को ऊपर और ऊपर के हिस्से के नीचे कर दिया और उस कौम के ऊपर पत्थरों की बारिश बरसाई. जो लोग अम्ल कौम लूती करते है बीवी के छोटे पीछे के मकाम को इस्तेमाल करते है तो उन के लिये हजरत अली फरमाते है कि उनको कत्ल करके आग में जला दो. हज़रत इमाम अबू हनीफा रह0 अ0 फरमाते है कि पहाड़ की चोटी पर या बुलंद ऊंची जगह पर से गिराकर मार मार कर हलाक कर दो।

अगर ये मज़मून और ज़्यादा देखना है तो "पोशीदा राज़" किताब का मुताअला करें, मोहम्मद अशरफ अमरोही

जलक के मुख़्तसर साज़कर

जलक जिसकी तफसील हमने पहले भी बयान कर दी है, लेकिन चूंकि ये भी एक बुरी गंदगी की आदत आम हो रही है हम कुछ लिखने पर मजबूर है, हो सकता है कि अल्लाह तआला हमारी उन चंद सतरो को ज़रिया बनाकर किसी की हिफाज़त फरमा दें।

जलक यानि हाथ से मनीअ निकालना ये जलक वाली आदत व अम्ल बहुत बड़ा और बहुत बुरा खबीस अम्ल है। और इस अम्ल खबीस की उस कद्र ज़्यादती है कि दुनिया भर में शायद कोई मुल्क ऐसा हो कि जहां ये खबीस अम्ल न होता हो, और उस खबीस अम्ल की बदौलत बहुत से लोग हालकत इख्तयार किये हुए है। पढ़े लिखे हुए भी और अनपढ़ भी उसकी वजह जिरयान मनीअ ज़्यादती

एहतलाम , रारअत अनाजिल रकत, मनीअ, बुरे ख्यालात, वहशत, में डालने वाले ख्यालात सूरत का बे रौनक होना, चेहरे का हुलिया खराब होना, मेदे कमजोर होना, गुर्दा मसाने की कमजोर होना ,जिसकी वजह से पैशाब की ज़्यादती, आंखों की रोशनी कम होना, दिमाग कमज़ोर होना, पागल दीवाना हो जाना, हौल, दिल का धड़कना, आला तनासुल का टेढा हो जाना, उसकी जड़ पतली हो जाना, नीचे गड्ढे हो जाना, रगों का उभरा हुआ होना, नामर्द हो जाना, बुजदिल हो जाना, रंज व गम का ज्यादा होना, वगैरहा वगैरहा जो लोग उस बुरी आदत का खामियाज़ा भुगत चुके है वही लोग, इसकी हक़ीकत व तबाही को खूब जानते है। यानि कब्र का हाल मुर्दा ही बखूबी जानता है कि जलक की वजह से मज़कूरा बीमारियां पैदा होती है।

जलक़ की हक़ीक़त का ज़िक्र

जलक को ज़िलक भी कहते है यानि फिसलना लगज़िश करना, तरीका उस खबीस आदत का ये होता है कि हाथ को थूक या तैल या कोई मुलायम चीज लगाकर अनाज़िल कर लेते है, बाज़ लोग हाथ के बजाये चारपाई वगैरहा के सुराख वगैरहा में अपने मज़े को फना करते है और बहुत से तरीके है , जिनको बयान करने से भी घिन आती है और ये आदत अकसर तन्हा अकेले रहने वाले लोगो को लगती है कि वह खबीस अम्ल करने लगते है हकीम व तिब्बी की नज़रों राय में कुव्वत मर्दानगी को खोने वाला और आला तनासुल को बर्बाद करने वाला इन्तहाई दर्जा का नुकसान व तबाह करने वाला जलक बराबर कोई अमल नही है। बल्कि मर्द औरत के साथ ज़िना करना भी ज़्यादा बुरा है। खास कि ये जलक का फअल रंज व गम को पैदा करता है क्योंकि उसके करने वाले की लज्ज़त हयात व इशरत शबाब व राहत हयात व मुसर्रत ज़िन्दगी फना हो जाती है

और ज़िन्दगी का असल मक़सद फौत हो जाता है दिल बुझा बुझा और गमगीन हो जाता है पूरे दिन की कमजोरी इन्तहाई दर्जे को पहुंच जाती है। आला तनासुल फालिज लगे हुए एज़ा की तरह हो जाता है और ऐसे मरीज मसल और नामर्द के हो जाते है।

इस बात को ख़ूब समझ कर छोड़ दो

अल्लाह तआला ने औरत की शर्मगाह को इस लहत से पर्दादार बनाई है कि आला तनासुल को अन्दर दाखिल करने और बाहर निकालने के वक़्त आला तनासुल फैला फुला हो जाता है किसी तरह की चोट नही लगती और न रगड लगती है।

इसके बर खिलाफ मर्दों का मक़अद (पखाना निकलने की जगह) उस पर जो रगे है, जिसे फुज़ले से (उनका काम पखाना रोकने का है) कि जब तक पैखाना गलाज़त बाहर नही निकलता रगें खुलती नही है, जबकि उस कमीने फअल यानि लवातत में ज़बरदस्ती की हरकत अन्दर बाहर करने की उस फअल के खिलाफ होगी लाज़मी तौर पर आला तनासुल को रगड़ व चोट लगेगी।

दूसरे ये कि रहम जज़्ब करने की कुव्वत कुदरती तौर से होती है और ये कैफियत पखाने की जगह को हासिल नही है और ये काम शैतानी है गैर फितरी है, गैर तिब्बी है, चूंकि इस कमीनी हरकत से बदन की ताक़त खास कर कमर की ताक़त खत्म हो जाती है। आला तनासुल की रगे मुर्दा हो जाती है। मक़अद की तंगी आला तनासुल की जड़ को पतला कर देती है कुव्वत मर्दानगी बिल्कुल नापैदा व फौत हो जाती है लज्ज़त मुजामअत का बिल्कुल भी अहसास नही होता।

औरत से मुबाशरत करना तिब्बी है और फितरी है, कि उसकी तरफ तबियत को ख्वाहिश होती है फिर औरत के हुस्न व जमाल को देखकर कुव्वत बाह को तरक़्क़ी मिलती है और आला तनासुल को

गिजाइत हासिल होती है। उसके बर खिलाफ उस कमीनी हरकत में ये फायदा नही होते बल्कि नुकसान ही नुकसान है जैसा कि ऊपर जिक्र किया है। शरीअत इस्लाम में सख्त हराम है और हकुमत के कानून में भी बहुत बड़ा जुर्म है और इस कमीनी हरकत की सजा आखरत में जो कुछ मिलेगी वह कर्जे में है पहले दुनिया ही में मिल जाती है जिल्लत व रुसवाई जिस्मानी बीमारियां पैदा हो जाती है और औरत की लज्जत से महरुम बल्कि उसके हुस्न व जमाल को देखकर रंज व गम में मुब्तला और औलाद की पैदाईश से नस्ल कट जाती है।

बात इतनी कह कर खत्म करता हूं–

उसका रब्द से करो तौबा व इस्तगफार "वकिना रब्बना अजाबल सनार"

कोई जिन्दगी है ,ये जिन्दगी न हंसी रही न खुशी रही
मेरी घुट के हसरतें भर गई मैं उस हसरतों का मजार हूं

मस्तूरात का जलक करना

मर्दों की तरह जलक की खबीस आदत औरतों में भी पाई जाती है, नौजवान औरतें जो शहवत भरी गुफतगु सुनने या देखने पर बुरा अंगिख्तया हो जाती है और उस तरह का स्टाक टी० वी० प्रोग्रामों में भरा हुआ है और ये जलक कुंवारी औरतो मे या बेवाओं में आदत पड़ती है। या फिर उन औरतों में ये आदत पैदा हो जाती है जिनके शौहरों से उनकी तसकीन नही होती है यानि उनकी ख्वाहिश की आग उनके शौहरों से बुझती न हो, जैसा कि पुराने ज़माने में ऐसा गंदा रिवाज बदकार फाहशा औरतों में पाया जाता था कि वह अपनी ख्वाहिश पूरी न होने की वजह से अपनी हिम्मत और हौसला के

मुताबिक चमडे या रेशम के कपडे का एक आला जिस में बारीक रुई भरकर मौटा व लम्बा चाहत के मुताबिक करके खूब मजबूत बनाती है फिर उसको दूसरी औरत के कमर मे बांध कर मर्दो की तरह से मिल कर मुंह काला करके तबियत खुश करती है। इसी तरह का खबीस काम कराने वाली औरतें जलक वाले मर्द की तरह मुसीबते सहती है फिर उन औरतों को मर्दो से मिलने मे बिल्कुल खुशी नही होती और न मर्दो को उन औरतों से मिलने में खुशी होती है और न ही ऐसी औरतों के हम्ल ठहरता है, और न ही बच्चे जन्ने के काबिल रहती है और ऐसी औरतों का ईलाज इन्तहाई मुश्किल दुश्वार हो जाता है।

महबलूक औरतों की अलामत व तबाहियां

महबलूक औरतों की अलामत उस लिए लिख रहा हू ताकि उन महबलूक औरतों के विरास अलामतों से अन्दाज लगाकर रुकने की भरपूर कोशिश करें वह हिदायत करे और उनके खैर ख्वाह वन कर उनकी खैर ख्वाही चाहिये ताकि दोनों का भला हो, और दोनों की इज्जत व अहतराम बाकी रहे वरनां उनकी अलामत को लिखकर किसी के ऐबों को छिपायेगा।

महबलूक औरतों की अलामतें ये भी है कि वह कडवे मिजाज की , जल्द गुस्से होन, हर वक्त नाक पर गुस्से रहना, चेहरे पर पीला पन काले दाग, चेहरे पर झाईयां, वे रौनकी और खुश्की जाहिर होती है। आंखे अन्दर को गड़ जाती है। आंखों के ईर्द गिर्द हल्के के निशान हो जाते है और ऐसी औरतों के सर में दर्द रहता है आवाज़ में वारीकी पस्ती व झरझराहट हो जाती है। वाल जल्दी गिरने लगते है, बालों में सफेदी भी जल्दी आ जाती है। भूख बन्द हो जाती है — खाना हज़म नही होता , दिल घबराता है हैज का खून बंद

हो जाता है। पेट और रानों में दर्द रहम और शर्मगाह के अन्दर बाहर वरम हो जाता है। बवासीर की बीमारी लायक हो सकती है। रहम से रतूबत बराबर निकलती रहती है। शर्मगाह में जलन व सूजन रहती है।

"अल्लाहुम्मा हफिज़ना मिन कुल ख़िलदुनिया व अज़ाबुल अखरत"

जलक़ से रोकने की तदबीरें

जलक उस क़द्र बुरी आदत है कि उससे माल जमाल, आमाल ईमान, औलाद सबका नुकसान होता है, बस वालिदेन और उनके सर परस्तों को चाहिये कि छोटी उम्र से ही अपनी औलाद की आदतों की तरफ पूरा पूरा ख्याल रखें, और छोटी सी छोटी बात पर गहरी और कड़ी नज़र रखें ताकि हर बुरे अंदेशे से भी हिफाजत हो, जवान, मर्द और औरत को खुद ज़रुरी है कि ऐसे ख्यालात व हालात से बचें, जो जलक़ की खबीस आदत की तरफ मायल करें और अगर पहले मुब्तला हो तो उनको बहुत जल्द छोड़ दें और जिनमें ये अलामत पाई जाये तो उनका फौरन बंदोबस्त व इंतज़ाम करना चाहिये, ताकि वह जलक़ की खबीस आदत से बच जावें, मसलन चेहरा बे रौनक हो, बदन इन्तहाई दुबला, पतला रफतार बे सलीका आंखें बे रौनक़ हो, ज़ाहिर है बुरी नेक चलन अपने साथियों से भी किनारा कशी इख्तयार करती हों, अगर उन आदतों को देखते हो और वालिदैन सरपरस्तों ने नही रोका तो फिर जलक़ के बुर और बुरे नतीजे जाहिर होने लगते है मसलन मिजाज़ हर वक़्त लड़ने मरने और क़त्ल करने खून करने का हो जाता है, किसी से भी उसकी मवाफकत नही हो पाती, पाव में जंजीरे डालने और पागल खाने भेजने की हालत हो जाती है और आम तौर पर महबलूक़ मरीज ही पागल खानों में ज़्यादा होते है जबकि उनका मर्ज तरक्की कर चुका होता है।

पागल खाने में भी अकेले रहना पसन्द कर लेते है। किसी से भी कोई मेल जोल नही रहता, अपने आप की खबर नही रहती। बिस्तर पर पडे रहता है। कोई न उठाये तो उठता नही, दूसरे से कपड़े बदलवाये तो बदले खुद नही बदलता, बे खबरी, ला शउरी, ला अक्ली, की ज़िन्दगी काटता है। बाज़ मर्तबा खुदकशी भी कर लेता है। यानि अपना मर जाना जिन्दगी के मुक़ाबले मे अच्छा समझता है। कि हलाक हो जाता है।

और बाज जलक के मरीज़ अपने आला तनासुल को काट डालते है ये समझते हुए कि उस ग़लत कारी की वजह से मेरे ऊपर मुसीबतों के पहाड़ टूटे है और फिर अपने तन्दरुस्त होने की उम्मीद भी खत्म हो जाती है। महबलूक को आम तौर पर हथेलियों से पसीना ज्यादा आता है और अगर उनसे बात की जाये तो वह शर्म की वजह से सामने सीधे खड़े होकर नही देखते ये आलमत महबलूक की अलामतों से भी होती हैं और जैसा कि हमने "पौशीदा खजाने" किताब में तहरीर किया है कि ये अलामत असेब की भी होती है । ये आसेब ज़िन्नात की ही किस्म से है, जिन्नात व आसेब की पूरी तफसील हमारे दूसरी किताब में मुताअला करें।

हर वह इंसान जो जमीन की तरफ देखकर बातें करता हो उसको महबलूक नही समझना चाहिये क्योंकि बिला वजह बद गुमानी करना मना है। अल्लाह तआला ने फरमाया "या अजतनबू अकसीरा मिनल ज़न अन बाअज़ अलज़न असम" कि बदगुमानी से बहुत बचा करो इसलिए कि बदगुमानी गुनाह की चीज़ है। इसी तरह समझो जो लोग ज़िना की कसरत में मुब्तला होते है तो ज़िना के बुरे असरात की वजह से भी आम तौर पर उनके सर के बाल जवानी में ही गिरने लगते है उड़ जाते है . उसका सर बालों से खाली होकर नंगा चिकना हो जाता है लेकिन उसकी बात की पेशे नज़र कि हर

वह शख्स जिसके सर के बाल न हो उड़ जाये उनको जानी जिना करने वाला मत समझो । ये बीमारी की वजह से भी होती है वगैरह वगैरहा ।

चन्द मज़मून से मुताअल्लिक़ हदीसें

निकाह इंसान की ज़रुरीयात है, जिस इंसान को निकाह करने में कोई शदीद मजबूरी न वह तो उसको महबर्द नही रहना चाहिये–

1– हजूरे अकरम स० अ० व० ने इरशाद फरमाया है, मोहताज है, मोहताज है वह मर्द जिसकी बीवी न हो और फरमाया मोहताज है वहऔरत जिसका शौहर न हो, सहाबा कराम रजि० अ० ने अर्ज किया है अगर चे वह मालदार हो ? आपने फरमाया कि चाहे कितना मालदार ही क्यों न हो? मतलब ये है कि बगैर निकाह के राहत व आराम व सकून नही मिलता वजअल मिनहा ज़ौवजा ऐसा हो मतलब ये है कि अल्लाह तआला ने फरमाया है कि हमने मियां बीवी का जोड़ा इसलिए बनाया कि सकून हासिल हो।

2– हुजूर स० अ० व० ने फरमाया मियां बीवी एक दूसरे की नज़र में देखते है तो अल्लाह उनको रहमत की नज़र से देखता है। निकाह वाले शख्स की दो रकअत नमाज़ निकाह वाले की बयासी रकाअतों वाली नज़र से देखता है । निकाह आधा ईमान है, यानि बग़ैर निकाह के ईमान कामिल नही होता, इसी तरह हर इबादत का सवाब मुकम्मल नही मिलता है।

3– और आप ने फ़रमाया कोई शौहर बीवी का बोसा लेता है तो उसके हर बोसे के ओज़ हज़ार साल की इबादत का सवाब मिलता है और जब गले लगता है तो दो हज़ार साल की इबादत का सवाब मिलता है, और जब मुबाशरत करता है तो तीन हज़ार साल का सवाब मिलता है और जब गुस्ल करता है तो चार हज़ार साल का सवाब मिलता है।

4– और आप स0 अ0 व0 ने फरमाया जब औरत अपने शौहर के लिये जैब व जीनत इख्तयार कर लेती है उसको दो हजार साल की इबादत का सवाब मिलता है और जो शौहर की इजाजत के बगैर घर से बाहर निकले तो ज़मीन आसमान और फरिश्ते उस पर लानत करते है जब तक वह लोट कर न आ जायें और जो औरत गैरों को अपना बदन दिखाती है तो गैरों की हर नज़र के बदले तीन सो साठ लानतें पड़ती है ।

5– और आप अ0 स0 व0 ने औरत को मुखातिब करते हुए कहा तुम में से कोई अपने शौहर से हामला होती है जबकि शौहर खुश भी हो तो औरत को दिन को रोज़ा रखने और रातों को इबादत करनेवलो की बरावर सवाब व अजर मिलता है और बच्चे पैदा होने का दर्द होता है उसके लिये जन्नत में आंखों की ठण्डक का सामान तैयार कर दिया जाता है और जब बच्चे को दूध पिलाती है तो एक घूंट बच्चे के पीने से एक नेकी मिलती है और अगर बच्चे की वजह से रात को जागना पडता है तो 70 गुलामों के आज़ाद होने का सवाब मिलता है अगर इसी हालत में इन्तक़ाल हो जाये तो शहादत का दर्जा मिलता है (ब हवाले हदीस इब्ने माजा शरीफ)

लड़कियों के रिश्ते व निस्बतों के लिये

उस वक्त रहमतों व बरकतों का क़हद पड़ रहा है इसी तरह बहुत सी लडकियां बे निकाह बैठी हुई है और वह अपने मां बाप के लिये बोझ बनी हुई है। रिश्ते व निस्बतें ना होने की वजह से और लड़के वाले इन्टरनैशलन भिखारी है। कारों में बैठकर बेकारों में भीख मांगते हैं। जो कि इन्तहाई शदीद तरीन हराम है ये किताब फतवा की नही है लेकिन मैं फतवा देता हूं कि अगर कोई ऐसा रिश्ता व निस्बत आये और मजबूर लाचार बेबस व बेकस है तो अगर सूद

वगैरहा का हराम माल मिल जाये तो ऐसे हरामियो को ये हराम का रु० दे दें, और इज्जत की हिफाजत करें, मगर बाज मर्तबा ऐसा भी होता है कि दुश्मन निस्बतो व रिश्ता को सेहर यानि जादू व शयातीन के जरिये रुकावट पैदा कर देते है जिसकी अलामत ये होती है कि वह लडकी नजरों में जंमती व खपती नही है । मगर मकरुह व नागावार सूरत में नजर आती है बिना किसी बात के दिल फिर जाता है वगैरहा .वगैरहा अगर सेहर व जादू वगैरहा के असरात से रुकावट हो तो हमारे पास इसका मख़सूस रुहानी ईलाजो अम्ल है। ज़रुरत मन्द हजरात मिलें या लिखें या फोन पर बात करें और ये अम्ल सिर्फ जुमा को या पीर के दिन किया जाता है उसके अलावा नही होता है।

हस्बे मंशा शादी करने के लिये

हस्बे मंशा यानि चाहत के मुताबिक शादी करने के लिये कि जिसमें अपनी मर्जी कि मुताबिक सही रिश्ता के लिये है। और कोई मज़ाहमत नहीं होती है। बल्कि मुखालिफीन मुआफिकीन हो कर खुशी से रिश्ते कर दें, इसके लिये भी एक अम्ल है मगर जायज़ ज़रुरत मंद ही मुलाकात या खतों किताबत करें.

ज़रुरी नोट– नाजायज़ रिश्ते के लिये इस अम्ल को कराने का ख्याल भी ना लायें वरना उसकी तबाही व बर्बादी के सिवा कुछ भी फायदा नही होगा।

ज़ौवजैन (मियां बीवी) की नाइत्तेफाकी दूर करने के लिये

आजकल ज़ौवजैन यानि शौहर बीवी के दरम्यान इत्तेफाक़ व

इत्तेहाद व मोहब्बत ना होने का कैहद पड़ रहा है। जिसकी वजह से जिन्दगी दोनों की दुख व अजीरन बनी हुई होती है इसके लिये काम ये है कि औरत अपने शौहर की दिलों जान से जाहिरन व बातिनन भरपूर व इज्जत करें, और शौहर ज्यादती पर सब्र करे और जब शौहर बाहर से घर में आये हंस मुख व बशासत से इस्तकबाल करें खाना बावजू पकाये और हमेशा मुस्तकिल तौर पर शौहर के साथ ही बैठकर एक ही दस्तरख्वान पर खाना खाया करें, उसके अलावा एक मजीद मुजर्रिब अम्ल मियां बीवी की मोहब्बत पैदा करने और बढाने के लिये खास है। जिसके लिये खतों किताबत करें या मुलाकात करें।

इन्तहाई कामयाब ईलाज

हमारे यहां तमाम किस्म के जादू व जिन्नात शैतान आसेब बदनज़री रुहानी जिस्मानी हवाई बीमारियों का ईलाज घर मकान दुकान वगैरहा की बंदिश अमानत दारी के साथ की जाती है। इसके अलावा शादी व रिश्तों का न लगना मिंया बीवी की ना इत्तेफाकी औलाद की नाफरमानी दुश्मनों की दुश्मनी से निजात के लिये कारोबार का न चलना, रोज़गार की बे बरकती, जायज़ मोहब्बत पैदा करने के लिये नाजायज मोहब्बत खत्म करने के लिये भागे हुए को वापिस बुलाने के लिये जादू को खुद बंदी की वजह से औलाद से महरुमी ज़िना बदकारी गंदी आदत छुड़ाने के लिये शैतानी जिन्नाती हमलों से बचने के लिये मिर्गी का बेहतरीन मुजर्रिब तावीज़ व ईलाज और बहुत से मुश्किलात से छुटकारा पाने के लिये वक्ते मुकर्राह पर मुलाकात करें।

ज़िन्दगी के लिये कुछ सबक

हर इंसान खास कर मुसलमानों को जिन्दगी गुजारने से मुताअल्लिक ये कुछ असबाक है कि उन पर अम्ल पैरा हों. हर इंसान के लिये जरुरी है कि रात को जल्दी सोये सुबह को जल्दी उठे, जो सुबह को देर से उठता है उसकी रोज़ी कम हो जाती है। "नामुसबीहा या कुलु रिजका " कि सुबह को देर तक सोना रिज्क़ को खा जाता है और सुबह को जल्दी उठना अक्लों तंदरुस्ती को बढ़ाता है। सुबह उठने के बाद बैतुलखला (लेट्रिन) से फरागत हो जाना बडी आदत है। अगर सुबह के वक़्त बैतुलखला होने की तकलीफ हो तो निहार मुंह एक गिलास पानी भर कर पानी पी लिया करें पेट की मजकूरा तकलीफ दूर हो जायेगी। बैतुल खला नंगे सर हरगिज़ नही जाना चाहिये इससे, खबीस जिन्नात व शयातीन का असर जल्दी हो जाता है बल्कि सर को ढांप कर जाना चाहिये, बैतुलखला जाने से पहले उसकी दुआ ज़रुर पढ़नी चाहिये। दुआ उलेमा कराम से मालूम करें। सुबह के वक़्त हर मौसम में सादे या ठंडे पानी से मुंह धोना वजू करना ज़्यादा अच्छा है ठंडे पानी से चेहरे पर खूबसुरती व हुस्नो जमाल पैदा होता है गर्म पानी में ये खूबी नही होती ये मेरे तजुंर्बा की खास बात है। आप भी तजुर्बा करके देखें, कि हर मौसम में ठंडा पानी चेहरे वगैरहा पर इस्तेमाल करें, मिस्वाक का खास अहतमाम करना चाहिये उस से दांत मजबूत होते है और चमकते है दांतों की बे शुमार बीमारियां कटती है और हिफाज़त होती है। हर इंसान को खास अल्लाह तआला के लिये इबादत करनी लाज़मी है ये इबादत रुह की गिज़ा है, जैसा खाना बदन की गिज़ा है। गुस्ल करना अच्छी बात है, गुस्ल करने से सेहत को तरक्की मिलती है तमाम बदन में खून हरकत में आता है बहुत सी बीमारियों से निजात व हिफाज़त हो जाती है सादे पानी से नहाना मुनासिब है।

गर्म पानी से नहाना ज्यादा मुनासिब है मगर हमेशा याद रखना ज्यादा गर्म पानी सर पर डालने से बाल जल्दी सफेद हो जाते है । लिहाजा कोई भी मौसम हो सर पर तेज गर्म पानी न डाले. इससे आंखों की रोशनी को भी नुकसान होता है और ठण्डे पानी से गुस्ल करने से पट्ठे सुस्त होते है और बुढापा जल्दी आता है।

इस बात को हमेशा याद रखे कि मुबाशरत से फारिग होने के बाद वर्जिश व कसरत करने के बाद खाना, खाना के बाद फौरन बाद चल कर आने के बाद जब तक पसीना खुश्क न हो जाये गुस्ल नही करना चाहिये. और गुस्ल करने का अच्छा वक्त सुबह का है सुबह हो नाश्ता करना जरुरी है. बुजुर्गों ने नाश्ते को अक्ल फरमाया है जब सुबह को घर से निकलो तो अपनी अक्ल के साथ मुराद नाश्ता करना है. नाश्ता छोड़ने से सरीन का गोश्त कम हो जाता है. हजरत अली फरमाते है नाश्ता करने से इंसान को गमों से निजात मिलती है।

रात को नमाज़ इबादत करके जल्दी सोना चाहिये. वजू करके सोने से जल्दी नींद आती है. दाहिनी करवट सोना सुन्नत है. बायें करवट सोने से जिस्म कमजोर होता है । रात को खाना छोड देने से बुढापा होता है. औरत से मिलकर सोने से कुव्वत बाह मर्दानगी कम होती है. ज्यादा सोने से बलगम व सफरह की बीमारी पैदा होती है. कोई अगर ज्यादा मोटा हो वर्जिश करने से पतला हो जाता है और अगर ज्यादा पतला हो तो मोटा हो जाता है. बदन को सही रखने के लिये मुनासिब वर्जिश अम्ल मे रखनी चाहिये। इसको पट्ठो को ताकत मिलती है। हड्डियों को ताकत मिलती है और वर्जिश का बेहतरीन वक्त सुबह व शाम है. वर्जिश के वक्त पेट भरा न हो. वर्जिश करने के बाद कोई ठण्डी चीज नही खानी पीनी चाहिये।

हर इंसान को नाफ के नीचे के बाल, बगलों के बाल, पन्द्रवे

दिन गूंड देने चाहिये, ज़्यादा से ज़्यादा चालीस दिन के अन्दर साफ कर देना जरुरी है नाफ के नीचे के बाल रहने से खुजली खारिश पैदा हो जाती है और इसी खारिश से नौजवान को जलक की खबीस आदत लग जाती है। बस हम इस सबक को यहीं पर खत्म करते है किताब के तवील होने का खौफ एक दो अम्ल खैर व बरकत का तहरीर करता हूं।

एक इन्तहाई मुफीद तरीन मुजर्रिब अम्ल

जब कोई बड़ी मुश्किल में मुब्तला हो जाये तो इस अम्ल को इख्तयार कीजिये कि सात या ग्यारह रोज़ रोज़े रखें, और हर रोज़ रात को इशा के बाद तहज्जुद के वक्त दो रकातें नमाज़ हाजत पढ़ें, बेहतर है कि उन दो रकाअतों में सूरत "या सीन" शरीफ की तिलावत करें या सुरत काफरोन व अखलास वाली सूरत पढ़ें, बाद नमाज़ के बाद 313 मर्तबा पढ़ें, (बेहतर है कि ये दुआ पढ़े हुए अहराम वलो बगैर सिले हुए कपड़े दो चादर लपेट लें, ये अहराम हज करने वालों की वर्दी है ये अल्लाह के घर का तवाफ करने वालों का लिबास है)इसके बाद अव्वल आखिर सात मर्तबा दुरुद शरीफ दरम्यान में दुआ अपनी हाजत रोक कर अर्रहमान व रहीम के रोबर पेश करें, इन्शाअल्लाह उससे बड़े बड़े मसले हो जायेंगे।

इस अम्ल की फज़ीलत में लिखने से कासिर हो उलेमा ए कराम व मुफतियान आज़म से मालूम कर सकते है या खत के ज़रिये मुझसे मालूम करें फकत।

ख्वाब में हजुर स० अ० व० का फरमूदा अम्ल

दो रकाअत नमाज़ हाजत पढ़ें, और चारों सजदों चालीस चालीस, मर्तबा आयतुल करीमा पढ़ें, मुसलसल सात या ग्यारह दिन

करें, जिस मकसद को चाहिये खैर की दुआ करें कामयाब होगे. इन्शाअल्लाहुल कवी।

रिज़्क़ की बरकत व तरक्क़ी के लिये तावीज़ व अम्ल

मेरे उस्ताज़ मुकर्रम व मोहतरम मददेजिल्लहिल आला ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला पर भरोसे व तवक्कल करते हुए उस तावीज़ व अम्ल से रिज़्क़ में बरकत खूब मिलती है , अम्ल तो है ये कि चाश्त की नमाज़ पढ़कर सूरत या सीन शरीफ एक मर्तबा पढ़े, और मग़रिब के बाद सूरते वाक़ए एक मर्तबा पढ़ लें तो ग़ैब से रिज़्क़ की खैरो बरकत होकर दस्ते ग़ैब का गुमान तक होने लगता है इतनी कुशादगी हो जाती है। नमाज़ की पाबन्दी करने वाले हज़रात ही उस तावीज़ व अम्ल से फायदा उठा सकते है।

कुव्वत मर्दानगी की कमजोरी का रुहानी ईलाज

कुव्वत मर्दानगी के ईलाज हमने अपनी पहली किताब में लिखें है मगर यहां उस का ईलाज रुहानी भी तहरीर करता हू जो कि मुस्तनद बुजुर्गों से मुझे हासिल हुआ है और उसका फायदा उठाने वालों ने मुझे खतूत भी लिखे है दिल चाहा कि इस किताब को उससे भी मज़ीन करुं दो रुहानी अम्ल ये है कि जब भी गुस्ल करें या जब कभी भी मुबाशरत से फारिग़ हो तो किसी मीठी चीज़ पर सात मर्तबा ये आयत पढ़कर दम करके हमेशा खा लिया करें इन्शाअल्लाह उल कवी फायदा होगा। आयत ये कुर्आन करीम के तीसरे पारे की दसवे रुकू की चौदहंवी आयत पढ़ें।

सही फिक्रें

औरत को सिंगार करना जायज है, फैशन नाजायज है, औरत का मुरीद शौहर अपनी औलाद की नजरों में जलील ख्वार होता है। जिसकी बीवी बे हया बे वफा हो, उसको जहान्नुम की जरुरत नही है।

जो औरत के साथ ज्यादा वक्त गुजारता है वह कमजोर हिम्मत व नाकारा होता है।

किसी बेवा की इज्जत पर हाथ डालने से कुदरत लरज उठती है।

लानत है उन लोगों पर जो अपनी औरतों का गैरों से तआररुफ कराते है फिर उन पर शक करते है ।

जो अपनी बीवी को नही संभाल सकता वह दूसरों को क्या संभालेगा।

जो औरत अपने शौहर से वफा न कर सके वह दूसरो से क्या वफा करेगी।

ज़िना करने वाले शख्स से उसकी मां को भी पर्दा करना चाहिये।

कितने बे शर्म बे हया है वह लोग जो अपनी मक्कार बीवी को खुश करने के लिये अपनी मा के आंसू निकालना पसन्द करते है।

इस औलाद की किस्मत में कोई खुशी व खूबी नही है जो अपनी मां को रुलाये।

लडकियों के जवान होते ही उनकी शादियों की फिक्र किया करो, क्योंकि हराम खोर, नजरे जवान लड़कियों के घरों का तवाफ करती है।

औरत को गलत रास्तों पर मर्द ही ले जाते है मर्द का जैवर मेहनत, औरत का जैवर शर्म व हया है।

जो जोडे जहैज या रकम लेकर शादी करता है, उसे दुल्हा कह कर पुकारना मना है, क्योंकि वह खरीदा हुआ अपनी मक्कार बीवी का दिल खुश करने के लिये अपने वालिदैन का दिल मत खाओं।

फैशन परस्त औरत एतबार के काबिल नही होती वह वफाजाई नही हरजाई होती है।

औरत की कमाई पर जीना वाला मरदूद व बेशर्म होता है।

बस मैं अपनी किताब को यहीं पर खत्म करना चाहता हू, अल्लाह तआला फैज उठाने वालों को फैज़ नसीब फरमायें मुझे मेरी औलाद व मुताअल्लिकीन को हर शर व आफत से बचायें । आमीन या रब्बुलआलिमीन

"वस्सलल्लाहू तआला अला खैयर खलकीही मुहम्मद वा अला वाअसबहू व बारक व सल्लम अवला व आखर व जाहिर अव बातिनव"

मज़ीद ख़ुशख़बरी

हमारी किताब (पोशीदा राज) उर्दू इंग्लिश में भी आ गई है हिन्दी जबान में भी आने वाली है. ये (ये तन्हाई के सबक) इंग्लिश ज़बान मे अन करीब आ जायेगी, इन्शाअल्लाह तआला. जो थी किताब (कुर्आन करीम का हाफिज़ बनाने वाली) उससे अच्छी किताब शायद न किसी ने देखी हो न सुनी हो, रहमत व मग़फिरत वाले अर्रहमुर्राहिमीन की तौफीक़ से कि उसने मुझ पर फज़ल व करम फरमाया कितबा लिखाकर जो भी इस किताब को पढ़ेगा उस पर भी फज़ल रब्बी होगी। दुनिया भर में तमाम उलेमा कराम . खास कं हिफज़ कराम को बहुत फायदा होगा।

जो भी इस किताब में खूबी देखें वह अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करें , उस किताब का नाम है "कुर्आन करीम का हाफिज़ बनाने वाली"।